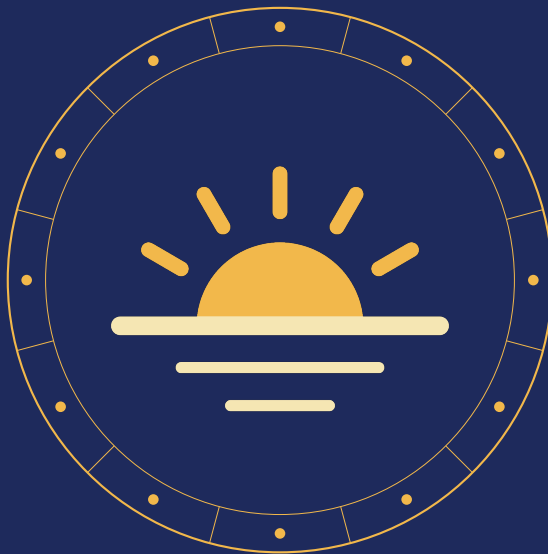


वैदिक ज्योतिष • जन्म कुंडली



AT ASTRO

व्यक्तिगत कुंडली रिपोर्ट

आपकी कुंडली, सटीक गणना के साथ, सरल हिन्दी में

किसके लिए तैयार

Riya Sharma

जन्म 14 मार्च 2001 • 18:45 • Pune, Maharashtra

कन्या लग्न • वृश्चिक राशि • अनुराधा नक्षत्र

तैयार की गई: 18 अक्टूबर 2026

atastro.in

AT ASTRO

विषय सूची

भाग 1 - आपका जन्म विवरण

जन्म विवरण और पंचांग	4
ग्रह स्थिति	5
विंशोत्तरी दशा	6

भाग 2 - आपका फलादेश

एक नज़र में आपकी कुंडली	7
आप कौन हैं: लग्न, चंद्र और नक्षत्र	8
आपके ग्रह, एक-एक करके	10
ग्रहों की युति	15
भावफल: आपके बारह भाव	16
आपकी कुंडली के योग और दोष	19
करियर, पढ़ाई और धन	20
प्रेम, संबंध और विवाह	21
स्वास्थ्य और ऊर्जा	23
आपकी वर्तमान दशा विस्तार से	24
आपके अगले 12 वर्ष, अवधि दर अवधि	25
पूरे जीवन की दशा समयरेखा	27
साढ़ेसाती, ढैया और बड़े गोचर	32
रिपोर्ट को अपने अतीत से मिलाएँ	34
आपकी कुंडली के उपाय	35
आपके अंक (संक्षिप्त अंक ज्योतिष)	38

भाग 3 - अपनी कुंडली को समझें

इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें	39
कुंडली क्या है?	39
बारह भाव	39
नौ ग्रह	40
बारह राशियाँ	40
नक्षत्र: 27 चंद्र-मंजिलें	41
ग्रहों का बल, स्थिति और स्वामित्व	41
दशा: आपके जीवन का समय-चक्र	42
गोचर, साढ़ेसाती और ढैया	42
योग और दोष	42
वर्ग कुंडलियाँ: D9 और D10	43
उपायों के प्रति हमारा दृष्टिकोण	43
अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न	43

इस रिपोर्ट के बारे में

इस रिपोर्ट का उपयोग कैसे करें

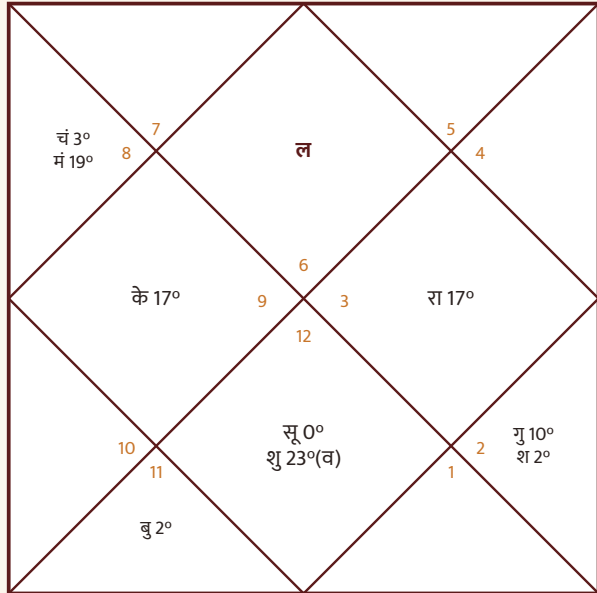
45

भाग 1 - आपका जन्म विवरण

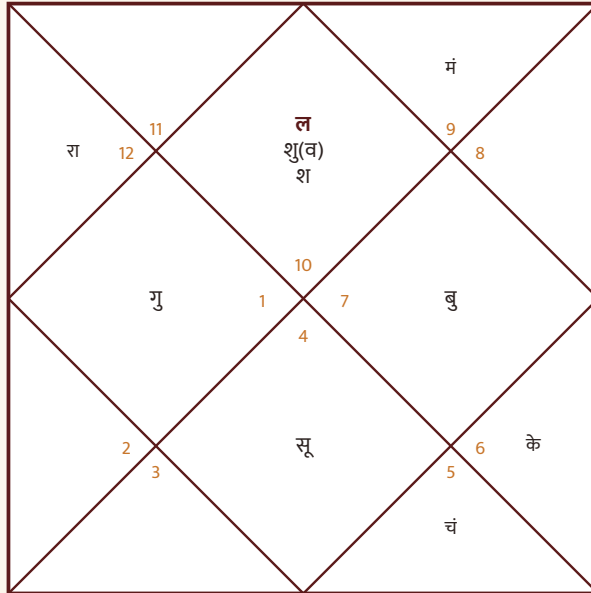
जन्म विवरण और पंचांग

नाम	Riya Sharma	लिंग	स्त्री
जन्म तिथि	14 मार्च 2001	जन्म समय	18:45
जन्म स्थान	Pune, Maharashtra	अक्षांश / देशांतर	18.5200, 73.8600
समय क्षेत्र	UTC+5.5	अयनांश	लाहिड़ी 23°52'26"
लग्न	कन्या	चंद्र राशि	वृश्चिक
नक्षत्र	अनुराधा (चरण 1)	सूर्य राशि (निरयन)	मीन
तिथि	कृष्ण षष्ठी	वार	बुधवार
योग	हर्षण	करण	गर
जन्म के समय दशा शेष	शनि 18 वर्ष 10 माह 17 दिन	वर्तमान दशा	बुध - सूर्य (2 मार्च 2027 तक)
मूलांक / भाग्यांक	5 / 2	मांगलिक	आंशिक / निरस्त

लग्न कुंडली (D1)



नवांश कुंडली (D9)



कुंडली में अंक राशियाँ हैं (1 = मेष ... 12 = मीन)। ऊपर का बीच वाला खाना आपका पहला भाव (लग्न) है; भाव घड़ी की उल्टी दिशा में चलते हैं। (व) = वक्र। सू सूर्य, चं चंद्र, मं मंगल, बु बुध, गु गुरु, शु शुक्र, श शनि, रा राहु, के केतु, ल लग्न।

भाग 1 - आपका जन्म विवरण

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	भाव	नक्षत्र (चरण)	स्वामी	स्थिति	नवांश	बल
लग्न	कन्या	01°12'46"	1	उत्तरा फाल्गुनी (2)	-	-	मकर	-
सूर्य	मीन	00°08'58"	7	पूर्वा भाद्रपद (4)	12	-	कर्क	6.5 मध्यम
चंद्र	वृश्चिक	03°24'57"	3	अनुराधा (1)	11	नीच	सिंह	2.0 निर्बल
मंगल	वृश्चिक	19°40'55"	3	ज्येष्ठा (1)	3, 8	स्वराशि	धनु	7.0 बलवान
बुध	कुंभ	02°56'10"	6	धनिष्ठा (3)	1, 10	-	तुला	4.0 निर्बल
गुरु	वृषभ	10°58'20"	9	रोहिणी (1)	4, 7	-	मेष	5.0 मध्यम
शुक्र	मीन	23°13'55"	7	रेवती (2)	2, 9	उच्च, वक्री	मकर	9.0 बलवान
शनि	वृषभ	02°17'44"	9	कृत्तिका (2)	5, 6	-	मकर	7.0 बलवान
राहु	मिथुन	17°58'27"	10	आर्द्रा (4)	-	-	मीन	-
केतु	धनु	17°58'27"	4	पूर्वाषाढ़ा (2)	-	-	कन्या	-

चर कारक (जैमिनी)

कारक	ग्रह	अर्थ
आत्मकारक	शुक्र	आत्मा, जीवन उद्देश्य
अमात्यकारक	मंगल	करियर, सलाहकार
भ्रातृकारक	गुरु	भाई-बहन, साहस
मातृकारक	चंद्र	माता, घर
पुत्रकारक	बुध	संतान, रचनात्मकता
ज्ञातिकारक	शनि	प्रतिद्वंद्वी, बाधाएँ
दारकारक	सूर्य	जीवनसाथी

आपकी कुंडली में बनने वाले योग

योग	कैसे बनता है	टिप्पणी
मालव्य योग (पंच महापुरुष)	शुक्र मीन में (उच्च), केंद्र के सातवें भाव में	बलवान
गजकेसरी योग	गुरु चंद्र से सातवें भाव में	गुरु मध्यम
चंद्र-मंगल योग	चंद्र और मंगल का संबंध	-
राजयोग	गुरु (4 भाव के स्वामी) और शनि (5 भाव के स्वामी): एक ही राशि में साथ	गुरु मध्यम, शनि बलवान
राजयोग	गुरु (4 भाव के स्वामी) और शुक्र (9 भाव के स्वामी): राशि परिवर्तन	गुरु मध्यम, शुक्र बलवान
नीचभंग (चंद्र)	चंद्र वृश्चिक में नीच है, परंतु मंगल (अपनी राशि का स्वामी) लग्न या चंद्र से केंद्र में है; शुक्र (अपनी उच्च राशि का स्वामी) लग्न या चंद्र से केंद्र में है	नीचता काफ़ी हद तक निरस्त: आयु और प्रयास के साथ परिणाम सुधरते हैं

भाग 1 - आपका जन्म विवरण

विंशोत्तरी दशा

महादशा	से	तक	आपकी आयु
शनि	30 जनवरी 2001	31 जनवरी 2020	0-18
बुध (वर्तमान)	31 जनवरी 2020	30 जनवरी 2037	18-35
केतु	30 जनवरी 2037	31 जनवरी 2044	35-42
शुक्र	31 जनवरी 2044	31 जनवरी 2064	42-62
सूर्य	31 जनवरी 2064	31 जनवरी 2070	62-68
चंद्र	31 जनवरी 2070	31 जनवरी 2080	68-78
मंगल	31 जनवरी 2080	31 जनवरी 2087	78-85
राहु	31 जनवरी 2087	31 जनवरी 2105	85-103

अगले 12 वर्षों की अंतर्दशाएँ

महादशा - अंतर्दशा	से	तक	आरंभ में आयु
बुध - सूर्य	26 अप्रैल 2026	2 मार्च 2027	25.1
बुध - चंद्र	2 मार्च 2027	1 अगस्त 2028	26.0
बुध - मंगल	1 अगस्त 2028	29 जुलाई 2029	27.4
बुध - राहु	29 जुलाई 2029	15 फ़रवरी 2032	28.4
बुध - गुरु	15 फ़रवरी 2032	23 मई 2034	30.9
बुध - शनि	23 मई 2034	30 जनवरी 2037	33.2
केतु - केतु	30 जनवरी 2037	28 जून 2037	35.9
केतु - शुक्र	28 जून 2037	29 अगस्त 2038	36.3
केतु - सूर्य	29 अगस्त 2038	3 जनवरी 2039	37.5

साढ़ेसाती के चक्र

चक्र	से	तक
साढ़ेसाती 1	15 नवंबर 2011	24 जनवरी 2020
साढ़ेसाती 2	28 जनवरी 2041	4 दिसंबर 2049

भाग 2 • आपका फलादेश • 01

एक नज़र में आपकी कुंडली

एक पृष्ठ में आपकी कुंडली

Riya, आपका जन्म **कन्या लग्न** में हुआ, **चंद्रमा वृश्चिक राशि** में और जन्म नक्षत्र **अनुराधा** है। नीचे आपकी कुंडली की मुख्य बातें हैं, हर एक आपकी वास्तविक ग्रह स्थिति से बनी है।

- आपके जीवन की दिशा।** आपके लग्नेश बुध आपके छठे भाव में 4.0/10 बल के साथ बैठे हैं। आप योद्धा हैं जो कड़ी मेहनत से बाधाएँ पार करते हैं। सेवा, स्वास्थ्य, कानून या प्रतिस्पर्धी क्षेत्र आपके अनुकूल हैं।
- आपका सबसे बलवान ग्रह: शुक्र।** शुक्र को 9.0/10 अंक मिले (उच्च, सातवें भाव में शुभ स्थिति)। आपके सातवें भाव में शुक्र प्रेम और साझेदारी के लिए स्वाभाविक स्थिति है।
- आपका मन और भावनाएँ।** वृश्चिक राशि में, जो चंद्र की नीच राशि है, चंद्र होने से आपकी भावनाएँ बहुत गहरी हैं। अनुराधा नक्षत्र (स्वामी शनि) में जन्म होने से आप वफ़ादार, समर्पित और मित्रता तथा टीम-वर्क में कुशल हैं।
- करियर।** आपके दशमेश बुध आपके छठे भाव में बैठे हैं। आप सेवा, नौकरी, स्वास्थ्य, कानून, प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों या समस्या-समाधान की भूमिकाओं में अच्छा करते हैं। कड़ी मेहनत ही आपका मार्ग है।
- संबंध।** आपके सप्तमेश गुरु आपके नौवें भाव में बैठे हैं। जीवनसाथी सौभाग्य लाता है और धार्मिक, शिक्षित या अलग पृष्ठभूमि का हो सकता है। विवाह आपका भाग्य बढ़ाता है।
- विशेष योग।** आपकी कुंडली में **मालव्य योग (पंच महापुरुष)** है (शुक्र मीन में (उच्च), केंद्र के सातवें भाव में)।

सबसे बलवान और सबसे कमजोर ग्रह

आपके सबसे बलवान ग्रह **शुक्र (9.0/10)** और **मंगल (7.0/10)** हैं। इनसे जुड़े क्षेत्रों में जीवन सहजता से चलता है। सबसे कमजोर **चंद्र (2.0/10)** और **बुध (4.0/10)** हैं: इन क्षेत्रों में सचेत प्रयास चाहिए, और उपाय खंड इन्हीं पर केंद्रित है।

अभी

आपकी **बुध महादशा** (30 जनवरी 2037 तक) में **सूर्य अंतर्दशा** (26 अप्रैल 2026 से 2 मार्च 2027 तक) चल रही है। बुध की महादशा में, बुध आपके छठे भाव में होने से समस्या-समाधान और सेवा की भूमिकाएँ सफल होती हैं। विस्तार के लिए 'वर्तमान दशा' खंड देखें।

भाग 2 • आपका फलादेश • 02

आप कौन हैं: लग्न, चंद्र और नक्षत्र

आपका लग्न: कन्या

कन्या लग्न होने से आप सूक्ष्मदर्शी, व्यावहारिक और बारीकियों पर ध्यान देने वाले हैं। आप वह देख लेते हैं जो दूसरे चूक जाते हैं, और चीजों को बेहतर बनाना पसंद करते हैं: व्यवस्था, स्वास्थ्य, काम, यहाँ तक कि लोग भी। आपके लग्नेश बुध आपको विश्लेषणात्मक बुद्धि और योजना, सेवा, स्वास्थ्य तथा तकनीकी कार्यों में अच्छा कौशल देते हैं। आप अपनी योग्यता को लेकर संकोची और स्वयं के प्रति कठोर हो सकते हैं। लोग आपको समझदार, सहायक और व्यवस्थित मानते हैं। यह स्वीकार करना कि 'काफ़ी अच्छा' अक्सर पर्याप्त होता है, और अपने मूल्य पर भरोसा करना ही आपके विकास का रास्ता है।

करियर: लेखा, विश्लेषण, आईटी, स्वास्थ्य सेवा, पोषण, संपादन, गुणवत्ता नियंत्रण, शोध और सेवा कार्य आपके अनुकूल हैं। आप व्यवस्थाओं को सुधारने में उत्कृष्ट हैं। संबंध: आप व्यावहारिक देखभाल से प्रेम दिखाते हैं, और ऐसा साथी चाहते हैं जो छोटी-छोटी बातों की कद्र करे। धन: आप पैसों के मामले में सावधान और व्यवस्थित हैं। स्वास्थ्य: पाचन और नसें संवेदनशील हैं, इसलिए दिनचर्या, शुद्ध भोजन और तनाव पर नियंत्रण जरूरी है। आपकी मुख्य शक्तियाँ सटीकता, सहायता की भावना और बुद्धि हैं; मुख्य चुनौतियाँ चिंता और आत्म-आलोचना। सबसे अच्छी आदत: रोज़ कामों की सूची, और उसके बाद ठीक से विश्राम।

आपका लग्न उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में है, जो उदारता, विश्वसनीयता और स्थायी साझेदारियों की प्रतिभा जोड़ता है।

आपकी चंद्र राशि: वृश्चिक

वृश्चिक राशि में, जो चंद्र की नीच राशि है, चंद्र होने से आपकी भावनाएँ बहुत गहरी हैं। आप गहन, निजी स्वभाव के और वफ़ादार हैं, और चोटों को लंबे समय तक याद रखते हैं। विश्वास आपके लिए सब कुछ है। भावनात्मक ईमानदारी और अतीत को छोड़ देना आपको सच्ची शांति देते हैं।

तनाव में आप रहस्यमय, संदेही या अत्यधिक गहन हो सकते हैं। आपको शांत करने वाली चीज़ें: निजता, भरोसेमंद लोगों से गहरी बातचीत और जाने देकर स्वयं को बदलना। संबंधों में आपको पूर्ण विश्वास चाहिए। आपकी भावनात्मक शक्ति लचीलापन है; विकास का क्षेत्र क्षमा है।

आपका जन्म नक्षत्र: अनुराधा (चरण 1)

अनुराधा नक्षत्र (स्वामी शनि) में जन्म होने से आप वफ़ादार, समर्पित और मित्रता तथा टीम-वर्क में कुशल हैं। आप जन्मस्थान से दूर और संगठनों में सफल हो सकते हैं। आप अनुशासित और हृदय से आध्यात्मिक हैं। दूसरों की गति के प्रति धैर्य आपको अच्छा नेतृत्व करने में मदद करता है।

अनुराधा का प्रतीक कमल है, और इसके देवता मित्रता के देवता मित्र हैं। आप मज़बूत बंधन बनाते हैं। प्रबंधन, कूटनीति, शोध, एनजीओ और अंतरराष्ट्रीय कार्य के करियर आपके अनुकूल हैं। संबंधों में आप समर्पित और निष्ठावान हैं।

आपकी सूर्य राशि: मीन

आपके सूर्य मीन राशि में हैं। आपका मूल स्वभाव करुणामय, कल्पनाशील और आध्यात्मिक है। आप दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील हैं और कला, उपचार तथा सेवा की ओर आकर्षित होते हैं। आप लगभग किसी भी स्थिति में ढल सकते हैं। सीमाएँ आपका पाठ हैं: अपनी ऊर्जा की रक्षा आपकी संवेदनशीलता को शक्ति में बदल देती है।

आपकी आत्मा, करियर और जीवनसाथी के ग्रह (चर कारक)

आपके आत्मकारक (आत्मा का ग्रह) शुक्र हैं। आपकी आत्मा का पाठ प्रेम, इच्छा और संबंधों से जुड़ा है: सुख या स्वीकृति पर निर्भर हुए बिना गहराई से प्रेम करना सीखना।

आपके अमात्यकारक (करियर का ग्रह) मंगल हैं: इंजीनियरिंग, तकनीकी कार्य, पुलिस या सेना, खेल, संपत्ति और साहस वाली भूमिकाओं में आप अच्छा करते हैं।

आपके दारकारक (जीवनसाथी का ग्रह) सूर्य हैं: आपका जीवनसाथी स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी और सम्मानित पृष्ठभूमि का, दृढ़ व्यक्तित्व वाला होने की संभावना है।

आपका जन्म पंचांग

तिथि: कृष्ण षष्ठी। कृष्ण षष्ठी पर जन्म होने से आप रक्षक हैं और प्रतिस्पर्धा संभालने में सक्षम हैं।

योग: हर्षण। हर्षण योग में जन्म होने से आप आनंदित, आशावादी हैं और दूसरों को प्रसन्नता देते हैं।

करण: गर। गर करण में जन्म होने से आप मेहनती और ज़मीन से जुड़े हैं, और प्रयास से सफल होते हैं।

वार: बुधवार। बुधवार (बुध का दिन) को जन्म होने से आप बुद्धिमान, संवाद-कुशल और हाज़िरजवाब हैं।

आपके ग्रह, एक-एक करके

सूर्य मीन राशि में, सातवें भाव में, बल 6.5/10 (मध्यम)

मीन राशि में सूर्य करुणामय, कल्पनाशील और आध्यात्मिक मूल स्वभाव देते हैं। आप दूसरों के प्रति संवेदनशील हैं और कला, उपचार तथा सेवा की ओर आकर्षित होते हैं। जब आपके काम का अर्थ होता है तब आत्मविश्वास बढ़ता है। पहचान चुपचाप आ सकती है। दृढ़ सीमाएँ बनाएँ ताकि आपकी दयालुता को हल्के में न लिया जाए।

आपके सातवें भाव में सूर्य जीवनसाथी और सार्वजनिक व्यवहार पर ध्यान रखते हैं। आप मज़बूत, आत्मविश्वासी साथी को आकर्षित कर सकते हैं, और साझेदारियाँ प्रतिष्ठा ला सकती हैं। संबंधों में अहंकार का टकराव मुख्य ध्यान देने योग्य बात है। श्रेय उचित रूप से बाँटने पर व्यापार, परामर्श और सार्वजनिक भूमिकाएँ आपके अनुकूल हैं।

दैनिक जीवन में, आप मज़बूत, सफल साथियों की ओर आकर्षित होते हैं और सार्वजनिक भूमिकाओं में अच्छा काम करते हैं। व्यापारिक साझेदारी, परामर्श, कानून, कूटनीति और ग्राहक प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। विवाह में आपको परस्पर सम्मान और स्पष्ट भूमिकाएँ चाहिए; जीवनसाथी से होड़ घर्षण पैदा करती है, जबकि एक-दूसरे की महत्वाकांक्षाओं का साथ देना आपको सशक्त जोड़ी बनाता है। जीवनसाथी सम्मानित परिवार से हो सकता है या अधिकार वाले पद पर हो सकता है। विवाह से अक्सर प्रतिष्ठा बढ़ती है। केवल अभिमान के आधार पर संबंधों के निर्णय न लें।

सूर्य मित्र राशि में हैं, इसलिए उनका आत्मविश्वास सहजता से और दूसरों के सहयोग के साथ काम करता है।

आपके कन्या लग्न के लिए सूर्य आपके बारहवें भाव (खर्च, यात्रा और आध्यात्म) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके सातवें भाव (विवाह और साझेदारी) में ले आते हैं।

पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में सूर्य आदर्शवादी, गहन पहचान देते हैं जो स्वयं से बड़े उद्देश्यों के प्रति समर्पित है। पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के स्वामी गुरु हैं, जो आपके नौवें भाव में बैठे हैं, इसलिए सूर्य के फल पर भाग्य, ज्ञान और गुरु का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: सूर्य की दृष्टि आपके पहले भाव पर है, जो आपके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, जीवन-शक्ति और प्रभावशाली उपस्थिति जोड़ती है।

संतुलित सूर्य के साथ ज़िम्मेदारी लेने पर आत्मविश्वास बढ़ता है।

व्यावहारिक सुझाव: नियमित रूप से छोटी ज़िम्मेदारियाँ लेकर आत्मविश्वास बढ़ाएँ।

चंद्र वृश्चिक राशि में, तीसरे भाव में, बल 2.0/10 (निर्बल)

वृश्चिक राशि में चंद्र नीच के हैं, जो बहुत गहरी और गहन भावनाएँ देता है। आप वफ़ादार और निजी स्वभाव के हैं, और चोटों को लंबे समय तक याद रखते हैं। विश्वास आपके लिए सब कुछ है। आपका अंतर्ज्ञान शक्तिशाली है। भावनात्मक ईमानदारी और जाने देना शांति लाते हैं।

आपके तीसरे भाव में चंद्र रचनात्मक, संवाद-कुशल मन देते हैं। आपको लेखन, बातचीत, छोटी यात्राएँ और भाई-बहनों तथा मित्रों से संपर्क अच्छा लगता है। आपका साहस मनोदशा के साथ घटता-बढ़ता है। नियमित अभ्यास आपके विचारों को परिणामों में बदलता है।

दैनिक जीवन में, आप रचनात्मक सोचते हैं और लेखन, बातचीत, कला या सोशल मीडिया से अच्छी तरह अभिव्यक्ति करते हैं। छोटी यात्राएँ आपके मन को ताज़ा करती हैं। आप भाई-बहनों और मित्रों से निकट संपर्क रखते हैं और कई बार घर या शहर बदल सकते हैं। मीडिया, लेखन, डिज़ाइन, संचार और पर्यटन के करियर आपके अनुकूल हैं। आपका साहस मनोदशा पर निर्भर करता है, इसलिए ऐसी दिनचर्या बनाएँ जो प्रेरणा को स्थिर रखे।

चंद्र नीच के हैं, इसलिए भावनाएँ बहुत गहरी होती हैं; स्थिर दिनचर्या और भरोसेमंद लोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। परंतु इसकी नीचता निरस्त होती है (नीचभंग): मंगल (अपनी राशि का स्वामी) लग्न या चंद्र से केंद्र में है; शुक्र (अपनी उच्च राशि का स्वामी) लग्न या चंद्र से केंद्र में है। ऐसा ग्रह अक्सर कमज़ोर शुरुआत करता है और आयु तथा प्रयास के साथ वास्तविक शक्ति बन जाता है।

आपके कन्या लग्न के लिए चंद्र आपके ग्यारहवें भाव (आय और मित्र) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके तीसरे भाव (प्रयास और संवाद) में ले आते हैं।

अनुराधा नक्षत्र में चंद्र वफ़ादार, समर्पित मन देते हैं। मित्रता और आध्यात्मिक अनुशासन आपको शांति देते हैं। अनुराधा नक्षत्र के स्वामी शनि हैं, जो आपके नौवें भाव में बैठे हैं, इसलिए चंद्र के फल पर भाग्य, ज्ञान और गुरु का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: चंद्र की दृष्टि आपके नौवें भाव पर है, जो आस्था, दया और यात्रा तथा सीखने का प्रेम जोड़ती है।

आपके चंद्र कमजोर हैं, इसलिए ये परिणाम भावनात्मक देखभाल पर निर्भर करते हैं: आराम, दिनचर्या और सहारा।

व्यावहारिक सुझाव: मन भारी होने पर किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करें।

मंगल वृश्चिक राशि में, तीसरे भाव में, बल 7.0/10 (बलवान)

वृश्चिक राशि में मंगल, जो उनकी अपनी राशि है, गहन, रणनीतिक और गहरी दृढ़ता वाली ऊर्जा देते हैं। संकट में आपमें बहुत सहनशक्ति और साहस है। शोध, सर्जरी, जाँच-पड़ताल और इंजीनियरिंग के लिए अच्छा। मन में बैर रखने से बचें।

आपके तीसरे भाव में मंगल साहस, पहल और स्वयं के प्रयास के लिए उत्कृष्ट स्थिति है। आप साहसी, प्रतिस्पर्धी और खेल, तकनीकी कौशल या उद्यमिता में अच्छे हैं। आप भाई-बहनों और मित्रों की रक्षा करते हैं। आपकी कड़ी मेहनत सफलता लाती है।

दैनिक जीवन में, आप साहसी, ऊर्जावान हैं और ऐसे जोखिम लेने को तैयार रहते हैं जिनसे दूसरे बचते हैं। खेल, रक्षा, इंजीनियरिंग, मीडिया, बिक्री और उद्यमिता आपके अनुकूल हैं। आप भाई-बहनों और मित्रों की रक्षा करते हैं और अपने साथियों के समूह का नेतृत्व कर सकते हैं। लेखन, बोलना और छोटी यात्राएँ मज़बूत क्षेत्र हैं। आपका स्वयं का प्रयास आपकी सबसे बड़ी पूँजी है, और सफलता निरंतर कर्म से आती है।

मंगल अपनी राशि में हैं, जो आत्मविश्वास, साहस और अपनी प्रिय चीज़ों की रक्षा की क्षमता देती है।

आपके कन्या लग्न के लिए मंगल आपके तीसरे भाव (प्रयास और संवाद) और आठवें भाव (अचानक बदलाव और शोध) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके तीसरे भाव (प्रयास और संवाद) में ले आते हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र में मंगल रक्षक, प्रभावशाली ऊर्जा और संकट में नेतृत्व देते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के स्वामी बुध हैं, जो आपके छठे भाव में बैठे हैं, इसलिए मंगल के फल पर काम, प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: मंगल की दृष्टि आपके नौवें भाव पर है, जो दृढ़ विश्वास और अपनी आस्थाओं के बचाव का साहस देती है। मंगल की दृष्टि आपके दसवें भाव पर है, जो करियर की महत्वाकांक्षा और कर्म-प्रधान उपलब्धि को आगे बढ़ाती है।

बलवान मंगल के साथ कर्म और दृढ़ता आपकी सफलता को आगे बढ़ाते हैं।

व्यावहारिक सुझाव: अपनी ऊर्जा खेल, फ़िटनेस या किसी चुनौतीपूर्ण परियोजना में लगाएँ।

बुध कुंभ राशि में, छठे भाव में, बल 4.0/10 (निर्बल)

कुंभ राशि में बुध मौलिक, वैज्ञानिक और आविष्कारशील मन देते हैं। तकनीक, शोध और नवाचार के लिए अच्छा। आप अपने समय से आगे सोचते हैं।

आपके छठे भाव में बुध समस्या-समाधान, सेवा और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छे हैं। आप लेखा, कानून, स्वास्थ्य, विश्लेषण या आईटी सपोर्ट में अच्छा कर सकते हैं। काम में आप बारीकियों पर ध्यान देते हैं। चिंता और तंत्रिका तनाव को दिनचर्या से संभालें।

दैनिक जीवन में, आप काम में समस्याएँ सुलझाने वाले हैं और बारीकियाँ, कागज़ात तथा प्रक्रियाएँ संभालने में अच्छे हैं। लेखा, ऑडिट, कानून, स्वास्थ्य सेवा, आईटी सपोर्ट और प्रतियोगी परीक्षाएँ आपके अनुकूल हैं। आप छोटी बातों की चिंता कर सकते हैं, जो पाचन या नींद पर असर डाल सकती है। स्पष्ट दिनचर्या और कामों की सूची मन को शांत करती है। सटीकता वाली परीक्षाओं में आप अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

बुध सम राशि में हैं, इसलिए आपकी बुद्धि अभ्यास से बढ़ती है।

आपके कन्या लग्न के लिए बुध आपके पहले भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) और दसवें भाव (करियर और प्रतिष्ठा) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके छठे भाव (काम, प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य) में ले आते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में बुध लयबद्ध, अंकों में कुशल और व्यापार-केंद्रित मन देते हैं। धनिष्ठा नक्षत्र के स्वामी मंगल हैं, जो आपके तीसरे भाव में बैठे हैं, इसलिए बुध के फल पर प्रयास और संवाद का भी रंग चढ़ता है।

आपके बुध कमजोर हैं, इसलिए बोलने और लिखने में तैयारी तथा अभ्यास विशेष रूप से मूल्यवान हैं।

व्यावहारिक सुझाव: बातें लिख लें और महत्वपूर्ण बातचीत से पहले तैयारी करें।

गुरु वृषभ राशि में, नौवें भाव में, बल 5.0/10 (मध्यम)

वृषभ राशि में गुरु व्यावहारिक ज्ञान और अच्छा आर्थिक विवेक देते हैं। धन और सुख लगातार बढ़ते हैं। आप परंपरा और स्थिरता को महत्व देते हैं।

आपके नौवें भाव में, जो गुरु का स्वाभाविक घर है, गुरु दृढ़ आस्था, सौभाग्य, गुरुओं के प्रति सम्मान और उच्च शिक्षा का प्रेम देते हैं। आपके पिता या मार्गदर्शक आपका साथ देते हैं। यात्रा, दर्शन और आध्यात्मिक जीवन विकास लाते हैं। नैतिकता से काम करने पर भाग्य आपके साथ रहता है।

दैनिक जीवन में, आप सिद्धांतवादी, आशावादी और भाग्यशाली हैं, और गुरुओं तथा बड़ों का सम्मान करते हैं। शिक्षण, कानून, धर्म, दर्शन, उच्च शिक्षा और यात्रा आपके अनुकूल हैं। आपके पिता या मार्गदर्शक सहयोगी हैं। उच्च शिक्षा, संभवतः विदेश में, महत्वपूर्ण हो सकती है। भाग्य आपके अच्छे आचरण के पीछे चलता है, इसलिए ईमानदारी और उदारता से काम करें।

गुरु शत्रु राशि में हैं, इसलिए अच्छा मार्गदर्शन पाने के लिए सचेत प्रयास चाहिए।

आपके कन्या लग्न के लिए गुरु आपके चौथे भाव (घर और संपत्ति) और सातवें भाव (विवाह और साझेदारी) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके नौवें भाव (भाग्य, ज्ञान और गुरु) में ले आते हैं।

रोहिणी नक्षत्र में गुरु समृद्ध, वृद्धि-केंद्रित ज्ञान देते हैं। रोहिणी नक्षत्र के स्वामी चंद्र हैं, जो आपके तीसरे भाव में बैठे हैं, इसलिए गुरु के फल पर प्रयास और संवाद का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: गुरु की दृष्टि आपके पहले भाव पर है, जो बड़ा आशीर्वाद है: यह स्वास्थ्य और चरित्र की रक्षा करती है और सम्मान दिलाती है। गुरु की दृष्टि आपके पाँचवें भाव पर है, जो बुद्धि, पढ़ाई और संतान को आशीर्वाद देती है।

संतुलित गुरु के साथ सीखना और नैतिकता अच्छे परिणाम लाते हैं।

व्यावहारिक सुझाव: सीखते रहें और अपने शिक्षकों का सम्मान करें।

शुक्र मीन राशि में, सातवें भाव में, बल 9.0/10 (बलवान)

मीन राशि में शुक्र उच्च के हैं, जो अत्यंत रोमांटिक, करुणामय और समर्पित प्रेम देता है। कलात्मक और आध्यात्मिक प्रतिभा प्रबल है।

आपके सातवें भाव में शुक्र प्रेम और साझेदारी के लिए स्वाभाविक स्थिति है। आप आकर्षक, मनमोहक साथी को आकर्षित करते हैं, और विवाह आपके लिए महत्वपूर्ण है। आप ग्राहकों से जुड़ी भूमिकाओं, कला, फैशन और व्यापारिक साझेदारी में अच्छा करते हैं।

दैनिक जीवन में, संबंध आपकी प्रसन्नता का केंद्र हैं, और आप आकर्षक साथियों को आकर्षित करते हैं। फैशन, डिजाइन, कला, परामर्श, कानून और ग्राहकों से जुड़ा व्यापार आपके अनुकूल है। विवाह प्रायः सुखी और सहयोगी होता है। साझेदारी में आप अच्छा करते हैं। परस्पर सराहना प्रेम को जीवित रखती है।

शुक्र उच्च के हैं, जो परिष्कृत रुचि, कलात्मक प्रतिभा और संबंधों में प्रसन्नता देता है। शुक्र वक्री हैं, इसलिए प्रेम और मूल्यों की फिर से परख हो सकती है; पुराने संबंध जीवन में लौट सकते हैं।

आपके कन्या लग्न के लिए शुक्र आपके दूसरे भाव (धन और परिवार) और नौवें भाव (भाग्य, ज्ञान और गुरु) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके सातवें भाव (विवाह और साझेदारी) में ले आते हैं।

रेवती नक्षत्र में शुक्र करुणामय, रोमांटिक और आध्यात्मिक प्रेम देते हैं। रेवती नक्षत्र के स्वामी बुध हैं, जो आपके छठे भाव में बैठे हैं, इसलिए शुक्र के फल पर काम, प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: शुक्र की दृष्टि आपके पहले भाव पर है, जो आकर्षण, शालीनता और आकर्षक व्यक्तित्व जोड़ती है।

आपके शुक्र बलवान होने से प्रेम, सुख और रचनात्मकता यहाँ सहजता से बहते हैं।

व्यावहारिक सुझाव: कला, संगीत और सौंदर्य का आनंद लें; ये आपको ऊर्जा देते हैं।

शनि वृषभ राशि में, नौवें भाव में, बल 7.0/10 (बलवान)

वृषभ राशि में शनि व्यावहारिक अनुशासन, आर्थिक समझदारी और स्थिर निर्माण देते हैं। आप धीरे पर निश्चित रूप से धन जमा करते हैं।

आपके नौवें भाव में शनि आपको आस्थाओं, शिक्षा और नैतिकता के प्रति गंभीर बनाते हैं। आप परंपरा पर प्रश्न उठा सकते हैं और अपना दर्शन बना सकते हैं। भाग्य कड़ी मेहनत से धीरे-धीरे आता है। पिता या मार्गदर्शकों से संबंधों में ज़िम्मेदारी जुड़ी हो सकती है।

दैनिक जीवन में, आप आस्थाओं को लेकर गंभीर हैं और अपना जीवन-दर्शन स्वयं बना सकते हैं। कानून, शिक्षण, प्रशासन और धार्मिक संस्थाएँ आपके अनुकूल हैं। भाग्य संयोग के बजाय कड़ी मेहनत से आता है। पिता या मार्गदर्शकों के साथ संबंध में ज़िम्मेदारी जुड़ी हो सकती है।

शनि मित्र राशि में हैं, इसलिए कड़ी मेहनत का उचित पुरस्कार मिलता है।

आपके कन्या लग्न के लिए शनि आपके पाँचवें भाव (पढ़ाई, प्रेम और संतान) और छठे भाव (काम, प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके नौवें भाव (भाग्य, ज्ञान और गुरु) में ले आते हैं।

कृत्तिका नक्षत्र में शनि अनुशासित समीक्षा और चीजों को सुधारने का निरंतर प्रयास देते हैं। कृत्तिका नक्षत्र के स्वामी सूर्य हैं, जो आपके सातवें भाव में बैठे हैं, इसलिए शनि के फल पर विवाह और साझेदारी का भी रंग चढ़ता है।

बलवान शनि के साथ अनुशासन आपकी महाशक्ति बन जाता है।

व्यावहारिक सुझाव: दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहें; आपके धैर्य का पुरस्कार मिलेगा।

राहु मिथुन राशि में, दसवें भाव में

मिथुन राशि में राहु, जो राहु के लिए सहज राशि है, तीक्ष्ण, आविष्कारशील बुद्धि और संवाद, तकनीक तथा मीडिया की प्रतिभा देते हैं। आप एक साथ कई विचारों पर काम कर सकते हैं। एकाग्रता इसे वास्तविक उपलब्धि में बदलती है।

आपके दसवें भाव में राहु करियर की प्रबल महत्वाकांक्षा और प्रसिद्धि या असामान्य सफलता की संभावना देते हैं। आप तकनीक, मीडिया, राजनीति या अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों में काम कर सकते हैं। तरीके नैतिक रखें, तो आपकी उन्नति स्थायी होगी।

दैनिक जीवन में, आप महत्वाकांक्षी हैं और असामान्य सफलता या प्रसिद्धि पा सकते हैं। तकनीक, मीडिया, राजनीति और अंतरराष्ट्रीय व्यापार आपके अनुकूल हैं। स्थायी परिणामों के लिए अपने तरीके नैतिक रखें।

आर्द्रा नक्षत्र में, जो राहु का अपना नक्षत्र है, राहु शक्तिशाली बौद्धिक और तकनीकी महत्वाकांक्षा देते हैं। आर्द्रा नक्षत्र के स्वामी राहु हैं, जो आपके दसवें भाव में बैठे हैं, इसलिए राहु के फल पर करियर और प्रतिष्ठा का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: राहु की दृष्टि आपके चौथे भाव पर है, जो घर में बेचैनी या बदलाव लाती है।

यहाँ राहु अच्छी स्थिति में हैं, इसलिए महत्वाकांक्षा और साहसी कदम परिणाम लाते हैं।

व्यावहारिक सुझाव: नए क्षेत्रों में सोच-समझकर जोखिम लें।

केतु धनु राशि में, चौथे भाव में

धनु राशि में केतु, जो केतु के लिए बलवान राशि है, आध्यात्मिक ज्ञान और कठोर कट्टरता से वैराग्य देते हैं। आप अपना सत्य स्वयं खोजते हैं।

आपके चौथे भाव में केतु घर में बेचैनी या सुख-सुविधाओं से निर्लिप्तता ला सकते हैं। आप अक्सर स्थान बदल सकते हैं या आध्यात्मिक स्थानों में घर जैसा महसूस कर सकते हैं। बाहरी विलासिता से अधिक आंतरिक संतोष मायने रखता है।

दैनिक जीवन में, आप घर में बेचैनी या सुख-सुविधाओं से अलगाव महसूस कर सकते हैं। आध्यात्मिक स्थान और सादगी शांति लाते हैं।

पूर्वाषाढा नक्षत्र में केतु आध्यात्मिक दृढ़ विश्वास देते हैं। पूर्वाषाढा नक्षत्र के स्वामी शुक्र हैं, जो आपके सातवें भाव में बैठे हैं, इसलिए केतु के फल पर विवाह और साझेदारी का भी रंग चढ़ता है।

दृष्टि: केतु की दृष्टि आपके दसवें भाव पर है, जो अपरंपरागत या बदलती करियर दिशाएँ लाती है।

केतु के अंतर्ज्ञान का उपयोग करें, पर व्यावहारिक जीवन से जुड़े रहें।

व्यावहारिक सुझाव: आध्यात्मिक रुचियों को व्यावहारिक लक्ष्यों से संतुलित करें।

भाग 2 • आपका फलादेश • 04

ग्रहों की युति

सूर्य और शुक्र एक साथ मीन राशि में (सातवें भाव)

जब ग्रह एक राशि में होते हैं, तो उनकी ऊर्जाएँ मिल जाती हैं और दोनों विवाह और साझेदारी पर असर डालते हैं।

सूर्य के साथ शुक्र आकर्षण और कलात्मक रुचि देते हैं। संबंधों पर अहंकार या व्यस्त दिनचर्या का असर पड़ सकता है; प्रेम के लिए समय निकालें।

चंद्र और मंगल एक साथ वृश्चिक राशि में (तीसरे भाव)

जब ग्रह एक राशि में होते हैं, तो उनकी ऊर्जाएँ मिल जाती हैं और दोनों प्रयास और संवाद पर असर डालते हैं।

चंद्र के साथ मंगल (चंद्र-मंगल) कमाने की लगन और भावनात्मक साहस देते हैं। भावनाएँ तीव्र हो सकती हैं; शांत प्रतिक्रिया मदद करती है।

गुरु और शनि एक साथ वृषभ राशि में (नौवें भाव)

जब ग्रह एक राशि में होते हैं, तो उनकी ऊर्जाएँ मिल जाती हैं और दोनों भाग्य, ज्ञान और गुरु पर असर डालते हैं।

गुरु के साथ शनि वृद्धि और अनुशासन में संतुलन, और दीर्घकालिक सफलता की प्रबल संभावना देते हैं।

भाग 2 • आपका फलादेश • 05

भावफल: आपके बारह भाव

भावफल का अर्थ है 'भावों के फल'। यहाँ आपके बारह भावों में से हर एक है: उस पर कौन सी राशि है, उसका स्वामी कहाँ बैठा है, और उसमें कौन से ग्रह हैं।

पहला भाव: कन्या (स्वयं और स्वास्थ्य)

कन्या लग्न संवेदनशील पाचन और चिंता की प्रवृत्ति देता है। नियमित दिनचर्या, शुद्ध भोजन और तनाव-प्रबंधन आपके स्वास्थ्य के सबसे अच्छे साधन हैं।

इसके स्वामी बुध आपके छठे भाव में बैठे हैं। आपके लग्नेश सेवा और प्रतिस्पर्धा के छठे भाव में बैठे हैं। आप योद्धा हैं जो कड़ी मेहनत से बाधाएँ पार करते हैं। सेवा, स्वास्थ्य, कानून या प्रतिस्पर्धी क्षेत्र आपके अनुकूल हैं। स्वास्थ्य की दिनचर्या पर ध्यान दें।

व्यवहार में, आप प्रतिस्पर्धी या सेवा-प्रधान करियर में फलते-फूलते हैं और वे समस्याएँ सुलझाते हैं जिनसे दूसरे बचते हैं। स्वास्थ्य सेवा, कानून, सरकारी सेवा और प्रतियोगी परीक्षाएँ आपके अनुकूल हैं। स्वास्थ्य की कड़ी दिनचर्या रखें। आपके लग्नेश की दशाएँ ऐसी कड़ी मेहनत ला सकती हैं जिसका अंत विजय में होता है।

आपके लग्नेश कमजोर होने से स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और दिनचर्या बनाना ही बाकी सब की नींव है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए इसके फल मुख्य रूप से इसके स्वामी और इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों पर निर्भर करते हैं।

दूसरा भाव: तुला (धन और परिवार)

दूसरे भाव में तुला राशि होने से आय कला, साझेदारी या ग्राहकों के काम से आती है; सुख-सुविधा पर खर्च संतुलित रखें।

इसके स्वामी शुक्र आपके सातवें भाव में बैठे हैं। धन भाव के स्वामी सातवें भाव में बैठे हैं। धन साझेदारी, व्यापार या जीवनसाथी के माध्यम से आता है। विवाह आपकी आर्थिक स्थिति सुधार सकता है। व्यापार और ग्राहकों से जुड़ा काम आपके अनुकूल है।

व्यवहार में, विवाह और व्यापारिक साझेदारियाँ आर्थिक स्थिति सुधारती हैं। धनेश की दशाएँ जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से धन ला सकती हैं।

धनेश बलवान होने से बचत और पारिवारिक सहयोग लगातार बढ़ते हैं।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए इसके फल मुख्य रूप से इसके स्वामी और इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों पर निर्भर करते हैं।

तीसरा भाव: वृश्चिक (प्रयास और संवाद)

तीसरे भाव में वृश्चिक राशि होने से आपमें गहरा संकल्प और शोध-प्रधान कौशल है। आप गहराई से और कभी-कभी गोपनीयता से बात करते हैं। अपने लक्ष्यों के लिए आप कड़ा संघर्ष करते हैं।

इसके स्वामी मंगल आपके तीसरे भाव में बैठे हैं। पराक्रम भाव के स्वामी अपने ही भाव में बैठे हैं। आपमें प्रबल इच्छाशक्ति, अच्छा संवाद-कौशल और पहल करने का साहस है। स्वयं के प्रयास से सफलता मिलती है।

व्यवहार में, अभ्यास के साथ आपका साहस और कौशल बढ़ता रहता है। लेखन, मीडिया, खेल और बिक्री आपके अनुकूल हैं। तृतीयेश की दशाएँ नई परियोजनाओं के लिए उत्तम हैं।

तृतीयेश बलवान होने से आपके प्रयास और संवाद अच्छे परिणाम लाते हैं।

यहाँ बैठे ग्रह: चंद्र, मंगल। आपके तीसरे भाव में चंद्र रचनात्मक, संवाद-कुशल मन देते हैं। आपके तीसरे भाव में मंगल साहस, पहल और स्वयं के प्रयास के लिए उत्कृष्ट स्थिति है।

चौथा भाव: धनु (घर और संपत्ति)

चौथे भाव में धनु राशि होने से आपका घर आपके मूल्यों और ज्ञान-प्रेम को दर्शाता है। आप अलग-अलग स्थानों पर या विदेश में रह सकते हैं।

इसके स्वामी गुरु आपके नौवें भाव में बैठे हैं। सुख भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं। भाग्य आपके घर और शिक्षा का साथ देता है। आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि धार्मिक या सुसंस्कृत हो सकती है, और संपत्ति भाग्य से आती है।

व्यवहार में, भाग्य आपके घर का साथ देता है, और आप सुसंस्कृत परिवार से हो सकते हैं। सुखेश की दशाएँ संपत्ति के लिए भाग्यशाली हैं।

यहाँ बैठे ग्रह: केतु। आपके चौथे भाव में केतु घर में बेचैनी या सुख-सुविधाओं से निर्लिप्तता ला सकते हैं।

पाँचवाँ भाव: मकर (पढ़ाई, प्रेम और संतान)

पाँचवें भाव में मकर राशि होने से आप प्रेम को गंभीरता से लेते हैं और पढ़ाई में व्यावहारिक हैं।

इसके स्वामी शनि आपके नौवें भाव में बैठे हैं। पंचम (विद्या) भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं, जो दो त्रिकोण भावों का अत्यंत भाग्यशाली संयोग है। आप ज्ञानी, भाग्यशाली हैं और उच्च शिक्षा तथा आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होते हैं। संतान सौभाग्य लाती है।

व्यवहार में, ज्ञान और भाग्य साथ चलते हैं, और आप दूसरों को सिखा या मार्गदर्शन दे सकते हैं। पंचमेश की दशाएँ अत्यंत भाग्यशाली हैं।

पंचमेश बलवान होने से बुद्धि, पढ़ाई और रचनात्मकता फलती-फूलती हैं।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए इसके फल मुख्य रूप से इसके स्वामी और इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों पर निर्भर करते हैं।

छठा भाव: कुंभ (काम, प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य)

छठे भाव में कुंभ राशि होने से आप तकनीक के साथ और टीम में अच्छा काम करते हैं। रक्त-संचार का ध्यान रखें। आप नए तरीकों से समस्याएँ सुलझाते हैं।

इसके स्वामी शनि आपके नौवें भाव में बैठे हैं। षष्ठ (शत्रु) भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं। आस्थाओं, गुरुओं या पिता से जुड़ी कुछ चुनौतियाँ आ सकती हैं। दूसरों की सेवा भाग्य लाती है।

व्यवहार में, सेवा भाग्य लाती है, हालाँकि आस्थाओं को चुनौती मिल सकती है। षष्ठेश की दशाएँ दूसरों की मदद के अनुकूल हैं।

षष्ठेश बलवान होने से आप प्रतिस्पर्धा जीतते हैं और काम का दबाव अच्छी तरह संभालते हैं।

यहाँ बैठे ग्रह: बुध। आपके छठे भाव में बुध समस्या-समाधान, सेवा और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छे हैं।

सातवाँ भाव: मीन (विवाह और साझेदारी)

सातवें भाव में मीन राशि होने से आप कोमल, स्नेही और आध्यात्मिक साथी खोजते हैं। करुणा और समझ आपके संबंध को जोड़े रखते हैं।

इसके स्वामी गुरु आपके नौवें भाव में बैठे हैं। सप्तम (विवाह) भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं। जीवनसाथी सौभाग्य लाता है और धार्मिक, शिक्षित या अलग पृष्ठभूमि का हो सकता है। विवाह आपका भाग्य बढ़ाता है।

व्यवहार में, विवाह भाग्य लाता है और जीवनसाथी सुसंस्कृत हो सकता है। सप्तमेश की दशाएँ विवाह के लिए भाग्यशाली हैं।

यहाँ बैठे ग्रह: सूर्य, शुक्र। आपके सातवें भाव में सूर्य जीवनसाथी और सार्वजनिक व्यवहार पर ध्यान रखते हैं। आपके सातवें भाव में शुक्र प्रेम और साझेदारी के लिए स्वाभाविक स्थिति है।

आठवाँ भाव: मेष (अचानक बदलाव और शोध)

आठवें भाव में मेष राशि होने से जीवन में बदलाव जल्दी आते हैं और आप साहस से उनका सामना करते हैं। दुर्घटनाओं से सावधान रहें। साझा धन के लिए स्पष्ट समझौते रखें।

इसके स्वामी मंगल आपके तीसरे भाव में बैठे हैं। अष्टम भाव के स्वामी तीसरे भाव में बैठे हैं। संकट में आपमें साहस है और शोध या खोजी लेखन में रुचि है। यात्रा में सावधानी रखें।

व्यवहार में, संकट में आपमें साहस है; यात्रा में सावधानी रखें। अष्टमेश की दशाएँ शोध और लेखन के अनुकूल हैं।

अष्टमेश बलवान होने से आप बहुत लचीलापन और गहराई दिखाते हैं।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए इसके फल मुख्य रूप से इसके स्वामी और इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों पर निर्भर करते हैं।

नौवाँ भाव: वृषभ (भाग्य, ज्ञान और गुरु)

नौवें भाव में वृषभ राशि होने से आपकी आस्थाएँ व्यावहारिक और स्थिर हैं। भाग्य निरंतर प्रयास और पारिवारिक मूल्यों से आता है।

इसके स्वामी शुक्र आपके सातवें भाव में बैठे हैं। भाग्य भाव के स्वामी सातवें भाव में बैठे हैं। विवाह और साझेदारियाँ भाग्य लाती हैं। जीवनसाथी सिद्धांतवादी, सुशिक्षित या सम्मानित परिवार का हो सकता है।

व्यवहार में, विवाह और साझेदारियाँ भाग्य लाती हैं। भाग्येश की दशाएँ विवाह के अनुकूल हैं।

भाग्येश बलवान होने से भाग्य, मार्गदर्शक और अच्छे मूल्य आपका साथ देते हैं।

यहाँ बैठे ग्रह: गुरु, शनि। आपके नौवें भाव में, जो गुरु का स्वाभाविक घर है, गुरु दृढ़ आस्था, सौभाग्य, गुरुओं के प्रति सम्मान और उच्च शिक्षा का प्रेम देते हैं। आपके नौवें भाव में शनि आपको आस्थाओं, शिक्षा और नैतिकता के प्रति गंभीर बनाते हैं।

दसवाँ भाव: मिथुन (करियर और प्रतिष्ठा)

दसवें भाव में मिथुन राशि होने से आपका करियर संवाद और विविधता से फलता-फूलता है। मीडिया, लेखन, बिक्री, आईटी, शिक्षण, ट्रेडिंग और मार्केटिंग आपके अनुकूल हैं।

इसके स्वामी बुध आपके छठे भाव में बैठे हैं। कर्म (करियर) भाव के स्वामी छठे भाव में बैठे हैं। आप सेवा, नौकरी, स्वास्थ्य, कानून, प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों या समस्या-समाधान की भूमिकाओं में अच्छा करते हैं। कड़ी मेहनत ही आपका मार्ग है।

व्यवहार में, आप सेवा और प्रतिस्पर्धी भूमिकाओं में सफल होते हैं। दशमेश की दशाएँ नौकरी के अनुकूल हैं।

दशमेश कमजोर होने से आपका करियर धीरे-धीरे बनता है; निरंतरता ही कुंजी है।

यहाँ बैठे ग्रह: राहु। आपके दसवें भाव में राहु करियर की प्रबल महत्वाकांक्षा और प्रसिद्धि या असामान्य सफलता की संभावना देते हैं।

ग्यारहवाँ भाव: कर्क (आय और मित्र)

ग्यारहवें भाव में कर्क राशि होने से लाभ जनता से व्यवहार, संपत्ति या देखभाल वाले काम से आता है।

इसके स्वामी चंद्र आपके तीसरे भाव में बैठे हैं। लाभ भाव के स्वामी तीसरे भाव में बैठे हैं। लाभ संवाद, कौशल, भाई-बहन या छोटी यात्राओं से आता है। आपके प्रयासों का पुरस्कार मिलता है।

व्यवहार में, प्रयास और संवाद लाभ लाते हैं। लाभेश की दशाएँ अतिरिक्त आय के अनुकूल हैं।

लाभेश कमजोर होने से व्यावहारिक लक्ष्य रखें और कदम-दर-कदम आय बढ़ाएँ।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए इसके फल मुख्य रूप से इसके स्वामी और इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों पर निर्भर करते हैं।

बारहवाँ भाव: सिंह (खर्च, यात्रा और आध्यात्म)

बारहवें भाव में सिंह राशि होने से आप प्रतिष्ठा या शौक पर खर्च कर सकते हैं। पहचान विदेश से मिल सकती है।

इसके स्वामी सूर्य आपके सातवें भाव में बैठे हैं। व्यय भाव के स्वामी सातवें भाव में बैठे हैं। आपका जीवनसाथी दूर का हो सकता है। संबंधों में साथ यात्रा या साथ खर्च होता है।

व्यवहार में, जीवनसाथी दूर का हो सकता है। व्ययेश की दशाएँ जीवनसाथी के साथ यात्रा ला सकती हैं।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए इसके फल मुख्य रूप से इसके स्वामी और इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों पर निर्भर करते हैं।

आपकी कुंडली के योग और दोष

मालव्य योग (पंच महापुरुष)

आपकी कुंडली में यह कैसे बनता है: शुक्र मीन में (उच्च), केंद्र के सातवें भाव में। (बलवान)

मालव्य योग (पाँच 'महापुरुष' योगों में से एक) तब बनता है जब शुक्र अपनी या उच्च राशि में केंद्र में हों। यह आकर्षण, सुख-सुविधा, कलात्मक प्रतिभा और अच्छा जीवन-स्तर देता है। संबंध और सौंदर्य आपके जीवन को समृद्ध करते हैं।

गजकेसरी योग

आपकी कुंडली में यह कैसे बनता है: गुरु चंद्र से सातवें भाव में। (गुरु मध्यम)

गजकेसरी योग उपस्थित है, पर गुरु कमजोर हैं, इसलिए यह शांत रूप में काम करता है: प्रसिद्धि के बजाय विचारशील मन और मार्गदर्शकों की मदद।

चंद्र-मंगल योग

आपकी कुंडली में यह कैसे बनता है: चंद्र और मंगल का संबंध।

चंद्र-मंगल योग चंद्र और मंगल के साथ होने या एक-दूसरे पर दृष्टि डालने से बनता है। यह कमाने की लगन, व्यापारिक समझ और भावनात्मक साहस देता है।

राजयोग

आपकी कुंडली में यह कैसे बनता है: गुरु (4 भाव के स्वामी) और शनि (5 भाव के स्वामी): एक ही राशि में साथ। (गुरु मध्यम, शनि बलवान)

राजयोग उपस्थित है, पर इसमें शामिल एक ग्रह बलवान नहीं है, इसलिए इसके परिणाम वास्तविक पर मध्यम हैं, और प्रयास से आते हैं।

राजयोग

आपकी कुंडली में यह कैसे बनता है: गुरु (4 भाव के स्वामी) और शुक्र (9 भाव के स्वामी): राशि परिवर्तन। (गुरु मध्यम, शुक्र बलवान)

राजयोग उपस्थित है, पर इसमें शामिल एक ग्रह बलवान नहीं है, इसलिए इसके परिणाम वास्तविक पर मध्यम हैं, और प्रयास से आते हैं।

नीचभंग (चंद्र)

आपकी कुंडली में यह कैसे बनता है: चंद्र वृश्चिक में नीच है, परंतु मंगल (अपनी राशि का स्वामी) लग्न या चंद्र से केंद्र में है; शुक्र (अपनी उच्च राशि का स्वामी) लग्न या चंद्र से केंद्र में है। (नीचता काफ़ी हद तक निरस्त: आयु और प्रयास के साथ परिणाम सुधरते हैं)

नीचभंग योग: आपकी कुंडली में जो ग्रह नीच (कमजोर) है, उसकी कमजोरी निरस्त हो जाती है। ऐसा ग्रह अक्सर शुरू में कमजोर होता है और जीवन में आगे चलकर सच्ची शक्ति बन जाता है, कभी साधारण शुरुआत से ऊँचाई तक ले जाता है।

मांगलिक (मंगल) दोष

मंगल लग्न से आपके तीसरे भाव में और चंद्र से पहले भाव में है। परिहार: मंगल स्वराशि में है, गुरु की मंगल पर दृष्टि।

आपकी कुंडली तकनीकी रूप से मांगलिक है, पर शास्त्रीय नियमों से दोष निरस्त है (जैसे मंगल अपनी या उच्च राशि में, या मंगल पर गुरु की दृष्टि)। जो बचता है वह स्वभाव है: आपके मंगल प्रबल और सक्रिय हैं, और स्पष्टवादिता को सराहने वाला साथी सबसे अच्छा मेल है।

काल सर्प दोष

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष नहीं है: आपके सभी ग्रह राहु-केतु अक्ष के एक ही ओर नहीं हैं।

करियर, पढ़ाई और धन

आपका करियर भाव

दसवें भाव में मिथुन राशि होने से आपका करियर संवाद और विविधता से फलता-फूलता है। मीडिया, लेखन, बिक्री, आईटी, शिक्षण, ट्रेडिंग और मार्केटिंग आपके अनुकूल हैं।

आपके दशमेश बुध आपके छठे भाव में बैठे हैं। कर्म (करियर) भाव के स्वामी छठे भाव में बैठे हैं। आप सेवा, नौकरी, स्वास्थ्य, कानून, प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों या समस्या-समाधान की भूमिकाओं में अच्छा करते हैं। कड़ी मेहनत ही आपका मार्ग है।

व्यवहार में, आप सेवा और प्रतिस्पर्धी भूमिकाओं में सफल होते हैं। दशमेश की दशाएँ नौकरी के अनुकूल हैं।

आपके दसवें भाव में ग्रह: आपके दसवें भाव में राहु करियर की प्रबल महत्वाकांक्षा और प्रसिद्धि या असामान्य सफलता की संभावना देते हैं।

आपका करियर ग्रह

आपके अमात्यकारक (करियर का ग्रह) मंगल हैं: इंजीनियरिंग, तकनीकी कार्य, पुलिस या सेना, खेल, संपत्ति और साहस वाली भूमिकाओं में आप अच्छा करते हैं।

आपकी करियर कुंडली (दशमांश D10)

आपकी करियर कुंडली (D10) का लग्न वृषभ है: आप स्थिर, भरोसेमंद पेशेवर प्रतिष्ठा बनाते हैं, अक्सर वित्त, उत्पादों या गुणवत्ता से जुड़ी।

आपकी कुंडली के अनुकूल करियर क्षेत्र

- बुध से जुड़े करियर: व्यापार, लेखा, आईटी, मीडिया, लेखन, शिक्षण, बिक्री और ट्रेडिंग।
- मंगल से जुड़े करियर: इंजीनियरिंग, पुलिस, रक्षा, खेल, सर्जरी, रियल एस्टेट, निर्माण और तकनीकी क्षेत्र।
- राहु से जुड़े करियर: तकनीक, विमानन, विदेशी कंपनियाँ, शोध, मीडिया, राजनीति और नए ज़माने के क्षेत्र।

धन: कैसे आता है और कैसे जाता है

दूसरे भाव में तुला राशि होने से आय कला, साझेदारी या ग्राहकों के काम से आती है; सुख-सुविधा पर खर्च संतुलित रखें।

ग्यारहवें भाव में कर्क राशि होने से लाभ जनता से व्यवहार, संपत्ति या देखभाल वाले काम से आता है।

आपके धनेश शुक्र आपके सातवें भाव में बैठे हैं। धन भाव के स्वामी सातवें भाव में बैठे हैं। धन साझेदारी, व्यापार या जीवनसाथी के माध्यम से आता है। विवाह आपकी आर्थिक स्थिति सुधार सकता है। व्यापार और ग्राहकों से जुड़ा काम आपके अनुकूल है।

आपके लाभेश चंद्र आपके तीसरे भाव में बैठे हैं। लाभ भाव के स्वामी तीसरे भाव में बैठे हैं। लाभ संवाद, कौशल, भाई-बहन या छोटी यात्राओं से आता है। आपके प्रयासों का पुरस्कार मिलता है।

अगले 12 वर्षों में करियर के सबसे अच्छे समय

- **2 मार्च 2027 से 1 अगस्त 2028** (बुध-चंद्र, आयु 26): बुध (दशमेश), चंद्र (लाभेश (आय)) सक्रिय। ध्यान: करियर के पहले कदम, पदोन्नति और प्रतिष्ठा। विश्वसनीयता: कम।
- **1 अगस्त 2028 से 29 जुलाई 2029** (बुध-मंगल, आयु 27): बुध (दशमेश), मंगल (करियर ग्रह) सक्रिय। ध्यान: करियर के पहले कदम, पदोन्नति और प्रतिष्ठा। विश्वसनीयता: मध्यम।
- **29 जुलाई 2029 से 15 फ़रवरी 2032** (बुध-राहु, आयु 28): बुध (दशमेश), राहु (दसवें भाव का ग्रह) सक्रिय। ध्यान: करियर के पहले कदम, पदोन्नति और प्रतिष्ठा। विश्वसनीयता: उच्च।
- **23 मई 2034 से 30 जनवरी 2037** (बुध-शनि, आयु 33): बुध (दशमेश) सक्रिय। ध्यान: करियर का शिखर, अधिकार और पद-प्रतिष्ठा। विश्वसनीयता: मध्यम।

भाग 2 • आपका फलादेश • 08

प्रेम, संबंध और विवाह

आपका विवाह भाव

सातवें भाव में मीन राशि होने से आप कोमल, स्नेही और आध्यात्मिक साथी खोजते हैं। करुणा और समझ आपके संबंध को जोड़े रखते हैं।

आपके सप्तमेश गुरु आपके नौवें भाव में बैठे हैं। सप्तम (विवाह) भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं। जीवनसाथी सौभाग्य लाता है और धार्मिक, शिक्षित या अलग पृष्ठभूमि का हो सकता है। विवाह आपका भाग्य बढ़ाता है।

व्यवहार में, विवाह भाग्य लाता है और जीवनसाथी सुसंस्कृत हो सकता है। सप्तमेश की दशाएँ विवाह के लिए भाग्यशाली हैं।

आपके सातवें भाव में ग्रह: आपके सातवें भाव में सूर्य जीवनसाथी और सार्वजनिक व्यवहार पर ध्यान रखते हैं। आप मज़बूत, आत्मविश्वासी साथी को आकर्षित कर सकते हैं, और साझेदारियाँ प्रतिष्ठा ला सकती हैं। संबंधों में अहंकार का टकराव मुख्य ध्यान देने योग्य बात है। श्रेय उचित रूप से बाँटने पर व्यापार, परामर्श और सार्वजनिक भूमिकाएँ आपके अनुकूल हैं। आपके सातवें भाव में शुक्र प्रेम और साझेदारी के लिए स्वाभाविक स्थिति है। आप आकर्षक, मनमोहक साथी को आकर्षित करते हैं, और विवाह आपके लिए महत्वपूर्ण है। आप ग्राहकों से जुड़ी भूमिकाओं, कला, फैशन और व्यापारिक साझेदारी में अच्छा करते हैं।

आपका जीवनसाथी ग्रह

आपके दारकारक (जीवनसाथी का ग्रह) सूर्य हैं: आपका जीवनसाथी स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी और सम्मानित पृष्ठभूमि का, दृढ़ व्यक्तित्व वाला होने की संभावना है।

प्रेम और रोमांस

पाँचवें भाव में मकर राशि होने से आप प्रेम को गंभीरता से लेते हैं और पढ़ाई में व्यावहारिक हैं।

आपके पंचमेश शनि आपके नौवें भाव में बैठे हैं। पंचम (विद्या) भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं, जो दो त्रिकोण भावों का अत्यंत भाग्यशाली संयोग है। आप ज्ञानी, भाग्यशाली हैं और उच्च शिक्षा तथा आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होते हैं। संतान सौभाग्य लाती है।

शुक्र आपके सातवें भाव में होना विवाह और साझेदारी के लिए आदर्श है।

आपकी विवाह कुंडली (नवांश D9)

आपकी विवाह कुंडली (D9) का लग्न मकर है: प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी समय के साथ आपके विवाह को मज़बूत करती हैं।

विवाह का समय

26 अप्रैल 2026 से 2 मार्च 2027 (बुध-सूर्य, आयु 25 से): सूर्य: दारकारक (जीवनसाथी ग्रह)। गुरु कर्क में गोचर करके (25 जनवरी 2027 से 26 जून 2027) इसे सहारा देते हैं। इस अवधि में कुछ संकेत विवाह का समर्थन करते हैं; यह वास्तविक संभावना है, विशेषकर यदि पहले से कोई गंभीर संबंध हो। विश्वसनीयता: मध्यम।

2 मार्च 2027 से 1 अगस्त 2028 (बुध-चंद्र, आयु 26 से): चंद्र: लाभेश (इच्छापूर्ति)। गुरु कर्क में गोचर करके (25 जनवरी 2027 से 26 जून 2027) इसे सहारा देते हैं। इस अवधि में कुछ संकेत विवाह का समर्थन करते हैं; यह वास्तविक संभावना है, विशेषकर यदि पहले से कोई गंभीर संबंध हो। विश्वसनीयता: मध्यम।

29 जुलाई 2029 से 15 फ़रवरी 2032 (बुध-राहु, आयु 28 से): राहु: इच्छा का ग्रह, अचानक विवाह करा सकता है। गुरु कन्या में गोचर करके (29 मार्च 2029 से 25 अगस्त 2029) इसे सहारा देते हैं। इस अवधि में कुछ संकेत विवाह का समर्थन करते हैं; यह वास्तविक संभावना है, विशेषकर यदि पहले से कोई गंभीर संबंध हो। विश्वसनीयता: मध्यम।

15 फ़रवरी 2032 से 23 मई 2034 (बुध-गुरु, आयु 30 से): गुरु: सप्तमेश। गुरु मकर में गोचर करके (5 मार्च 2032 से 13 अगस्त 2032) इसे सहारा देते हैं। इस अवधि में कुछ संकेत विवाह का समर्थन करते हैं; यह वास्तविक संभावना है, विशेषकर यदि पहले से कोई गंभीर संबंध हो। विश्वसनीयता: मध्यम।

संबंधों के लिए गुरु के सहायक गोचर

- **25 जनवरी 2027 से 26 जून 2027:** गुरु कर्क में। आपके ग्यारहवें भाव में गुरु का गोचर इच्छाएँ पूरी करता है, जिनमें अक्सर विवाह भी शामिल है।
- **5 मार्च 2032 से 13 अगस्त 2032:** गुरु मकर में। आपके पाँचवें भाव में गुरु का गोचर प्रेम और प्रेम संबंधों के गंभीर होने में सहायक है।
- **24 अक्टूबर 2032 से 18 मार्च 2033:** गुरु मकर में। आपके पाँचवें भाव में गुरु का गोचर प्रेम और प्रेम संबंधों के गंभीर होने में सहायक है।
- **28 मार्च 2034 से 6 अप्रैल 2035:** गुरु मीन में। आपके सातवें भाव में गुरु का गोचर विवाह और साझेदारी के लिए सबसे मज़बूत समयों में से एक है।

भाग 2 • आपका फलादेश • 09

स्वास्थ्य और ऊर्जा

कन्या लग्न संवेदनशील पाचन और चिंता की प्रवृत्ति देता है। नियमित दिनचर्या, शुद्ध भोजन और तनाव-प्रबंधन आपके स्वास्थ्य के सबसे अच्छे साधन हैं।

आपका छठा भाव

आपके षष्ठेश शनि आपके नौवें भाव में बैठे हैं। षष्ठ (शत्रु) भाव के स्वामी नौवें भाव में बैठे हैं। आस्थाओं, गुरुओं या पिता से जुड़ी कुछ चुनौतियाँ आ सकती हैं। दूसरों की सेवा भाग्य लाती है।

आपकी ऊर्जा बनाने वाले ग्रह

- **बुध:** बुध नसों, त्वचा और श्वास के कारक हैं; प्राणायाम और स्क्रीन से बीच-बीच में विराम मदद करते हैं।
- **चंद्र:** चंद्र मन, नींद और शरीर के तरल पदार्थों के कारक हैं; नियमित नींद, पर्याप्त पानी और भावनात्मक शांति उन्हें सहारा देते हैं।
- **शनि:** शनि हड्डियों, जोड़ों और दाँतों के कारक हैं; स्ट्रेचिंग, सही मुद्रा और कैल्शियम युक्त भोजन मदद करते हैं।

हर स्वस्थ वयस्क की तरह, साल में एक बार सामान्य जाँच करवाएँ। यह खंड प्रवृत्तियाँ बताता है, चिकित्सा सलाह नहीं।

भाग 2 • आपका फलादेश • 10

आपकी वर्तमान दशा विस्तार से

बुध महादशा (30 जनवरी 2037 तक)

बुध की महादशा में, बुध आपके छठे भाव में होने से समस्या-समाधान और सेवा की भूमिकाएँ सफल होती हैं। चिंता से बचें और कागज़ात व्यवस्थित रखें।

क्या करें: समस्याएँ सुलझाएँ और बारीकियाँ संभालें। किससे बचें: चिंता। सबसे अच्छा उपयोग: नौकरी में सफलता।

आपके कन्या लग्न के लिए बुध आपके पहले भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) और दसवें भाव (करियर और प्रतिष्ठा) के स्वामी हैं, इसलिए वे इन विषयों को आपके छठे भाव (काम, प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य) में ले आते हैं।

बुध-सूर्य अंतर्दशा: 26 अप्रैल 2026 से 2 मार्च 2027 तक

बुध की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा आपकी बुद्धि की पहचान और नेतृत्व के अवसर लाती है। आपकी कुंडली में सूर्य आपके सातवें भाव में बैठे हैं और बारहवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय गंभीर संबंध, विवाह और व्यापारिक साझेदार पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक मित्र हैं, इसलिए अवधि प्रायः सहजता से चलती है। विश्वसनीयता: मध्यम।

ग्रह अभी क्या कर रहे हैं (गोचर)

शनि मीन में (लग्न से सातवें भाव, चंद्र से पाँचवें भाव में): चंद्र से पाँचवें भाव में शनि: पढ़ाई, संतान और प्रेम में धैर्य चाहिए। सट्टे से बचें। गंभीर, एकाग्र पढ़ाई का पुरस्कार मिलता है।

गुरु कर्क में (लग्न से ग्यारहवें भाव, चंद्र से नौवें भाव में): चंद्र से नौवें भाव में गुरु: भाग्य, उच्च शिक्षा, यात्रा, मार्गदर्शकों और आध्यात्मिक विकास के लिए भाग्यशाली गोचर।

राहु कुंभ में (लग्न से छठे भाव, चंद्र से चौथे भाव में): चंद्र से चौथे भाव में राहु: घर का जीवन अस्थिर लग सकता है; स्थान-परिवर्तन या मरम्मत संभव है।

आपके सातवें भाव में शनि का गोचर साझेदारियों की परीक्षा लेता है और प्रतिबद्धता माँगता है।

भाग 2 • आपका फलादेश • 11

आपके अगले 12 वर्ष, अवधि दर अवधि

26 अप्रैल 2026 – 2 मार्च 2027 • बुध-सूर्य • आयु 25

बुध की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा आपकी बुद्धि की पहचान और नेतृत्व के अवसर लाती है। आपकी कुंडली में सूर्य आपके सातवें भाव में बैठे हैं और बारहवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय गंभीर संबंध, विवाह और व्यापारिक साझेदार पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक मित्र हैं, इसलिए अवधि प्रायः सहजता से चलती है। विश्वसनीयता: मध्यम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: नियमित रूप से छोटी जिम्मेदारियाँ लेकर आत्मविश्वास बढ़ाएँ।

2 मार्च 2027 – 1 अगस्त 2028 • बुध-चंद्र • आयु 26

बुध की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनात्मक और पारिवारिक मामले केन्द्र में लाती है। ज्यादा सोचने और चिंता से बचें। आपकी कुंडली में चंद्र आपके तीसरे भाव में बैठे हैं और ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय पहल, साइड प्रोजेक्ट, संपर्क बनाना और नौकरी की तलाश पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक शत्रु हैं, इसलिए कुछ खींचतान की अपेक्षा रखें; कुछ घर्षण के बाद परिणाम आते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु कर्क में (लग्न से ग्यारहवें भाव में) गोचर कर रहे हैं। विश्वसनीयता: कम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: मन भारी होने पर किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करें।

1 अगस्त 2028 – 29 जुलाई 2029 • बुध-मंगल • आयु 27

बुध की महादशा में मंगल की अंतर्दशा आपके विचारों में कर्म और ऊर्जा लाती है। तकनीकी काम के लिए अच्छा है; तीखी वाणी पर ध्यान दें। आपकी कुंडली में मंगल आपके तीसरे भाव में बैठे हैं और तीसरे भाव व आठवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय पहल, साइड प्रोजेक्ट, संपर्क बनाना और नौकरी की तलाश पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक शत्रु हैं, इसलिए कुछ खींचतान की अपेक्षा रखें; कुछ घर्षण के बाद परिणाम आते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु कन्या में (लग्न से पहले भाव में) गोचर कर रहे हैं। विश्वसनीयता: मध्यम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: अपनी ऊर्जा खेल, फिटनेस या किसी चुनौतीपूर्ण परियोजना में लगाएँ।

29 जुलाई 2029 – 15 फरवरी 2032 • बुध-राहु • आयु 28

बुध की महादशा में राहु की अंतर्दशा अपरंपरागत विचार, तकनीक और विदेशी संबंध लाती है। तथ्यों की पुष्टि करें और बढ़ा-चढ़ाकर कहने से बचें। आपकी कुंडली में राहु आपके दसवें भाव में बैठे हैं, इसलिए यह समय करियर के पहले कदम, पदोन्नति और प्रतिष्ठा पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु कन्या में (लग्न से पहले भाव में) गोचर कर रहे हैं। विश्वसनीयता: उच्च।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: नए क्षेत्रों में सोच-समझकर जोखिम लें।

15 फरवरी 2032 – 23 मई 2034 • बुध-गुरु • आयु 30

बुध की महादशा में गुरु की अंतर्दशा बुद्धि को ज्ञान से जोड़ती है। उच्च शिक्षा, शिक्षण और सलाहकार कार्य के लिए अच्छा है। आपकी कुंडली में गुरु आपके नौवें भाव में बैठे हैं और चौथे भाव व सातवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय भाग्य, पिता की भूमिका, तीर्थयात्रा और शिक्षण पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक शत्रु हैं, इसलिए कुछ खींचतान की अपेक्षा रखें; कुछ घर्षण के बाद परिणाम आते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु धनु में (लग्न से चौथे भाव में) गोचर कर रहे हैं। यह अवधि अष्टम शनि के साथ पड़ती है, इसलिए धैर्य और नियमित दिनचर्या महत्वपूर्ण हैं। विश्वसनीयता: मध्यम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: सीखते रहें और अपने शिक्षकों का सम्मान करें।

23 मई 2034 – 30 जनवरी 2037 • बुध-शनि • आयु 33

बुध की महादशा में शनि की अंतर्दशा व्यवस्थित, व्यावहारिक काम और दीर्घकालिक योजना के अनुकूल है। प्रगति स्थिर रहती है। आपकी कुंडली में शनि आपके नौवें भाव में बैठे हैं और पाँचवें भाव व छठे भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय भाग्य, पिता की भूमिका, तीर्थयात्रा और

शिक्षण पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु मीन में (लग्न से सातवें भाव में) गोचर कर रहे हैं। यह अवधि अष्टम शनि के साथ पड़ती है, इसलिए धैर्य और नियमित दिनचर्या महत्वपूर्ण हैं। विश्वसनीयता: मध्यम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहें; आपके धैर्य का पुरस्कार मिलेगा।

30 जनवरी 2037 – 28 जून 2037 • केतु-केतु • आयु 35

केतु की महादशा में केतु की ही अंतर्दशा। आत्म-चिंतन, वैराग्य और आध्यात्मिक रुचि चरम पर होते हैं। भ्रम में बड़े निर्णय लेने से बचें; ध्यान मदद करता है। आपकी कुंडली में केतु आपके चौथे भाव में बैठे हैं, इसलिए यह समय संपत्ति खरीदना, वाहन और पारिवारिक सुख पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक मित्र हैं, इसलिए अवधि प्रायः सहजता से चलती है। इस अवधि की शुरुआत में गुरु वृषभ में (लग्न से नौवें भाव में) गोचर कर रहे हैं। विश्वसनीयता: उच्च।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: आध्यात्मिक रुचियों को व्यावहारिक लक्ष्यों से संतुलित करें।

28 जून 2037 – 29 अगस्त 2038 • केतु-शुक्र • आयु 36

केतु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा वैराग्य भरे दौर में सुख-सुविधा और संबंध लाती है, जो स्वागतयोग्य संतुलन है। आपकी कुंडली में शुक्र आपके सातवें भाव में बैठे हैं और दूसरे भाव व नौवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु मिथुन में (लग्न से दसवें भाव में) गोचर कर रहे हैं। विश्वसनीयता: मध्यम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: कला, संगीत और सौंदर्य का आनंद लें; ये आपको ऊर्जा देते हैं।

29 अगस्त 2038 – 3 जनवरी 2039 • केतु-सूर्य • आयु 37

केतु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा प्रतिष्ठा को लेकर अनिश्चितता या अधिकारियों से तनाव ला सकती है। विनम्र रहें। आपकी कुंडली में सूर्य आपके सातवें भाव में बैठे हैं और बारहवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए यह समय विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार पर ध्यान लाता है। इस अवधि को चलाने वाले दोनों ग्रह स्वाभाविक शत्रु हैं, इसलिए कुछ खींचतान की अपेक्षा रखें; कुछ घर्षण के बाद परिणाम आते हैं। इस अवधि की शुरुआत में गुरु कर्क में (लग्न से ग्यारहवें भाव में) गोचर कर रहे हैं। विश्वसनीयता: मध्यम।

इस समय का सबसे अच्छा उपयोग: नियमित रूप से छोटी ज़िम्मेदारियाँ लेकर आत्मविश्वास बढ़ाएँ।

भाग 2 • आपका फलादेश • 12

पूरे जीवन की दशा समयरेखा

इस खंड में आपके जीवन की हर महादशा उसकी सभी अंतर्दशाओं के साथ दी गई है। बीती हुई अवधियाँ चिह्नित हैं, ताकि आप उन्हें अपने अनुभव से मिला सकें।

शनि महादशा • 30 जनवरी 2001 – 31 जनवरी 2020 • आयु 0-18 (बीत चुकी)

शनि की महादशा में, शनि आपके नौवें भाव में होने से आप अपना जीवन-दर्शन स्वयं बनाते हैं। भाग्य कड़ी मेहनत से आता है।

क्या करें: काम के माध्यम से अपना जीवन-दर्शन बनाएँ। किससे बचें: निराशा भरा संदेह। सबसे अच्छा उपयोग: मेहनत से कमाया भाग्य।

- **शनि** • 30 जनवरी 2001 – 3 फ़रवरी 2004 (बीत चुकी): शनि की महादशा में शनि की ही अंतर्दशा। अनुशासन, कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी प्रमुख रहते हैं। परिणाम धीरे आते हैं पर टिकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें और धैर्य रखें।
- **बुध** • 3 फ़रवरी 2004 – 13 अक्टूबर 2006 (बीत चुकी): शनि की महादशा में बुध की अंतर्दशा व्यावहारिक बुद्धि, व्यापार, लेखा और व्यवस्थित काम के अनुकूल है। यह उत्पादक, स्थिर समय है।
- **केतु** • 13 अक्टूबर 2006 – 22 नवंबर 2007 (बीत चुकी): शनि की महादशा में केतु की अंतर्दशा वैराग्य, आत्म-चिंतन और संभावित भ्रम लाती है। दिनचर्या स्थिर रखें और बड़े बदलावों से बचें।
- **शुक्र** • 22 नवंबर 2007 – 22 जनवरी 2011 (बीत चुकी): शनि की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा अक्सर इस दशा की सबसे अच्छी अवधियों में से एक होती है: सुख-सुविधा, संबंध, रचनात्मकता और स्थिर लाभ।
- **सूर्य** • 22 जनवरी 2011 – 4 जनवरी 2012 (बीत चुकी): शनि की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा अधिकारियों या पिता-समान लोगों से घर्षण ला सकती है। धैर्य और विनम्रता इसे पार करने में मदद करते हैं।
- **चंद्र** • 4 जनवरी 2012 – 4 अगस्त 2013 (बीत चुकी): शनि की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनाओं को भारी या गंभीर बना सकती है। सहारा, दिनचर्या और स्वयं की देखभाल महत्वपूर्ण हैं।
- **मंगल** • 4 अगस्त 2013 – 13 सितंबर 2014 (बीत चुकी): शनि की महादशा में मंगल की अंतर्दशा धीमे दौर में ऊर्जा लाती है; तकनीकी काम और संपत्ति के मामले आगे बढ़ते हैं, पर झुंझलाहट से बचें।
- **राहु** • 13 सितंबर 2014 – 20 जुलाई 2017 (बीत चुकी): शनि की महादशा में राहु की अंतर्दशा महत्वाकांक्षा, असामान्य अवसर और कुछ भ्रम लाती है। कड़ी मेहनत और ईमानदारी परिणाम लाती हैं।
- **गुरु** • 20 जुलाई 2017 – 31 जनवरी 2020 (बीत चुकी): शनि की महादशा में गुरु की अंतर्दशा अनुशासित दौर में ज्ञान, मार्गदर्शक और विकास लाती है। प्रायः करियर और परिवार के लिए अच्छा समय होता है।

बुध महादशा • 31 जनवरी 2020 – 30 जनवरी 2037 • आयु 18-35

बुध की महादशा में, बुध आपके छठे भाव में होने से समस्या-समाधान और सेवा की भूमिकाएँ सफल होती हैं। चिंता से बचें और कागज़ात व्यवस्थित रखें।

क्या करें: समस्याएँ सुलझाएँ और बारीकियाँ संभालें। किससे बचें: चिंता। सबसे अच्छा उपयोग: नौकरी में सफलता।

- **बुध** • 31 जनवरी 2020 – 29 जून 2022 (बीत चुकी): बुध की महादशा में बुध की ही अंतर्दशा। बुद्धि, संवाद, सीखने और व्यापार पर जोर रहता है। पढ़ाई, व्यापार और संपर्क बनाने के लिए अच्छा है।
- **केतु** • 29 जून 2022 – 26 जून 2023 (बीत चुकी): बुध की महादशा में केतु की अंतर्दशा आत्म-चिंतन, शोध में रुचि और संवाद में कुछ भ्रम लाती है। बारीकियाँ दोबारा जाँचें।
- **शुक्र** • 26 जून 2023 – 26 अप्रैल 2026 (बीत चुकी): बुध की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा रचनात्मकता, संबंध, सुख-सुविधा और लाभ लाती है। प्रायः सुखद और उत्पादक समय होता है।
- **सूर्य** • 26 अप्रैल 2026 – 2 मार्च 2027 (अभी): बुध की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा आपकी बुद्धि की पहचान और नेतृत्व के अवसर लाती है।
- **चंद्र** • 2 मार्च 2027 – 1 अगस्त 2028: बुध की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनात्मक और पारिवारिक मामले केंद्र में लाती है। ज़्यादा सोचने और चिंता से बचें।

- **मंगल** · 1 अगस्त 2028 – 29 जुलाई 2029: बुध की महादशा में मंगल की अंतर्दशा आपके विचारों में कर्म और ऊर्जा लाती है। तकनीकी काम के लिए अच्छा है; तीखी वाणी पर ध्यान दें।
- **राहु** · 29 जुलाई 2029 – 15 फ़रवरी 2032: बुध की महादशा में राहु की अंतर्दशा अपरंपरागत विचार, तकनीक और विदेशी संबंध लाती है। तथ्यों की पुष्टि करें और बढ़ा-चढ़ाकर कहने से बचें।
- **गुरु** · 15 फ़रवरी 2032 – 23 मई 2034: बुध की महादशा में गुरु की अंतर्दशा बुद्धि को ज्ञान से जोड़ती है। उच्च शिक्षा, शिक्षण और सलाहकार कार्य के लिए अच्छा है।
- **शनि** · 23 मई 2034 – 30 जनवरी 2037: बुध की महादशा में शनि की अंतर्दशा व्यवस्थित, व्यावहारिक काम और दीर्घकालिक योजना के अनुकूल है। प्रगति स्थिर रहती है।

केतु महादशा · 30 जनवरी 2037 – 31 जनवरी 2044 · आयु 35–42

केतु की महादशा में, केतु आपके चौथे भाव में होने से घर में बेचैनी या स्थान-परिवर्तन संभव है। संतोष भीतर खोजें।

क्या करें: शांति भीतर खोजें। किससे बचें: बेचैनी। सबसे अच्छा उपयोग: आंतरिक संतोष।

- **केतु** · 30 जनवरी 2037 – 28 जून 2037: केतु की महादशा में केतु की ही अंतर्दशा। आत्म-चिंतन, वैराग्य और आध्यात्मिक रुचि चरम पर होते हैं। भ्रम में बड़े निर्णय लेने से बचें; ध्यान मदद करता है।
- **शुक्र** · 28 जून 2037 – 29 अगस्त 2038: केतु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा वैराग्य भरे दौर में सुख-सुविधा और संबंध लाती है, जो स्वागतयोग्य संतुलन है।
- **सूर्य** · 29 अगस्त 2038 – 3 जनवरी 2039: केतु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा प्रतिष्ठा को लेकर अनिश्चितता या अधिकारियों से तनाव ला सकती है। विनम्र रहें।
- **चंद्र** · 3 जनवरी 2039 – 4 अगस्त 2039: केतु की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनात्मक वैराग्य या बेचैनी ला सकती है। दिनचर्या और सहारा मदद करते हैं।
- **मंगल** · 4 अगस्त 2039 – 1 जनवरी 2040: केतु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा अचानक ऊर्जा और जल्दबाजी के कर्म लाती है। दुर्घटनाओं और क्रोध से सावधान रहें।
- **राहु** · 1 जनवरी 2040 – 18 जनवरी 2041: केतु की महादशा में राहु की अंतर्दशा मिली-जुली इच्छाओं और वैराग्य के साथ भ्रमित कर सकती है। चीजें सरल रखें।
- **गुरु** · 18 जनवरी 2041 – 25 दिसंबर 2041: केतु की महादशा में गुरु की अंतर्दशा आध्यात्मिक ज्ञान और अच्छा मार्गदर्शन लाती है। यह सार्थक, चिंतनशील समय है।
- **शनि** · 25 दिसंबर 2041 – 3 फ़रवरी 2043: केतु की महादशा में शनि की अंतर्दशा अनुशासन और ज़िम्मेदारी लाती है; अकेलेपन से बचें।
- **बुध** · 3 फ़रवरी 2043 – 31 जनवरी 2044: केतु की महादशा में बुध की अंतर्दशा शोध, विश्लेषण और तकनीकी काम के अनुकूल है।

शुक्र महादशा · 31 जनवरी 2044 – 31 जनवरी 2064 · आयु 42–62

शुक्र की महादशा में, शुक्र आपके सातवें भाव में होने से विवाह और साझेदारियाँ प्रबल रूप से उभरती हैं। ग्राहकों से जुड़ा काम और रचनात्मक व्यापार फलता-फूलता है।

क्या करें: विवाह करें या साझेदारियाँ बनाएँ। किससे बचें: अवास्तविक अपेक्षाएँ। सबसे अच्छा उपयोग: प्रेम और व्यापार।

- **शुक्र** · 31 जनवरी 2044 – 2 जून 2047: शुक्र की महादशा में शुक्र की ही अंतर्दशा। प्रेम, सुख-सुविधा, कला, वाहन और समृद्धि पर ज़ोर रहता है। यह सुखद, आनंददायक समय है; संतुलन रखें।
- **सूर्य** · 2 जून 2047 – 1 जून 2048: शुक्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा अधिकार और पहचान लाती है, हालाँकि अहंकार संबंधों पर असर डाल सकता है।
- **चंद्र** · 1 जून 2048 – 31 जनवरी 2050: शुक्र की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनात्मक प्रसन्नता, पारिवारिक जीवन और सुख-सुविधा लाती है।
- **मंगल** · 31 जनवरी 2050 – 2 अप्रैल 2051: शुक्र की महादशा में मंगल की अंतर्दशा आरामदायक दौर में उत्साह, ऊर्जा और संपत्ति के मामले लाती है।

- **राहु** · 2 अप्रैल 2051 – 1 अप्रैल 2054: शुक्र की महादशा में राहु की अंतर्दशा प्रबल इच्छाएँ, असामान्य संबंध या विदेशी संपर्क लाती है। ईमानदारी को केंद्र में रखें।
- **गुरु** · 1 अप्रैल 2054 – 30 नवंबर 2056: शुक्र की महादशा में गुरु की अंतर्दशा ज्ञान और विकास लाती है, हालाँकि दोनों ग्रहों के मूल्य अलग हैं। प्रायः समृद्धि भरा समय।
- **शनि** · 30 नवंबर 2056 – 31 जनवरी 2060: शुक्र की महादशा में शनि की अंतर्दशा अक्सर उत्कृष्ट होती है: स्थिर लाभ, प्रतिबद्धता और स्थायी परिणाम।
- **बुध** · 31 जनवरी 2060 – 1 दिसंबर 2062: शुक्र की महादशा में बुध की अंतर्दशा रचनात्मकता, व्यापार और संवाद लाती है। प्रायः उत्पादक अवधि।
- **केतु** · 1 दिसंबर 2062 – 31 जनवरी 2064: शुक्र की महादशा में केतु की अंतर्दशा सुखों से वैराग्य और आध्यात्मिक रुचि लाती है।

सूर्य महादशा · 31 जनवरी 2064 – 31 जनवरी 2070 · आयु 62–68

सूर्य की महादशा में, सूर्य आपके सातवें भाव में होने से साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार महत्वपूर्ण हो जाते हैं। विवाह या व्यापारिक साझेदारी बन सकती है। अहंकार के टकराव से बचने के लिए श्रेय बाँटें।

क्या करें: साझेदारियाँ और सार्वजनिक संबंध बनाएँ। किससे बचें: जीवनसाथी पर हावी होना। सबसे अच्छा उपयोग: विवाह या मजबूत व्यापारिक गठबंधन।

- **सूर्य** · 31 जनवरी 2064 – 20 मई 2064: सूर्य की महादशा में सूर्य की ही अंतर्दशा। अधिकार, आत्मविश्वास और पहचान तीव्रता से केंद्र में आते हैं। आप नेतृत्व ले सकते हैं, सरकार या वरिष्ठों से व्यवहार कर सकते हैं, और स्वयं को सिद्ध करने की तीव्र इच्छा महसूस कर सकते हैं। स्वास्थ्य और ऊर्जा पर ध्यान दें, और अहंकार के टकराव से बचें।
- **चंद्र** · 20 मई 2064 – 18 नवंबर 2064: सूर्य की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनाएँ, परिवार और सार्वजनिक संबंध सामने लाती है। आपका अधिकार देखभाल में नरम पड़ता है। लोगों से व्यवहार, घर के मामलों और यात्रा के लिए अच्छा है। मनोदशा में उतार-चढ़ाव संभव है; कर्तव्य और आराम में संतुलन रखें।
- **मंगल** · 18 नवंबर 2064 – 26 मार्च 2065: सूर्य की महादशा में मंगल की अंतर्दशा ऊर्जा, साहस और निर्णायक कर्म जोड़ती है। नेतृत्व, संपत्ति, तकनीकी काम और प्रतिस्पर्धा के लिए मजबूत समय है। क्रोध पर ध्यान दें और बुखार, कटने-छिलने तथा वाहन चलाने में सावधानी रखें।
- **राहु** · 26 मार्च 2065 – 18 फ़रवरी 2066: सूर्य की महादशा में राहु की अंतर्दशा भ्रम मिली महत्वाकांक्षा ला सकती है। असामान्य अवसर, विदेशी संपर्क या प्रतिष्ठा में अचानक बदलाव संभव हैं। अधिकारियों से टकराव से बचें और ईमानदार रहें; अवधि के अंत तक स्थिति सँभल जाती है।
- **गुरु** · 18 फ़रवरी 2066 – 7 दिसंबर 2066: सूर्य की महादशा में गुरु की अंतर्दशा प्रायः अनुकूल रहती है। ज्ञान, मार्गदर्शक, पहचान और अच्छे निर्णय सूर्य के अधिकार से जुड़ते हैं। करियर में प्रगति, पढ़ाई, संतान और धार्मिक या नैतिक कार्यों के लिए अच्छा है।
- **शनि** · 7 दिसंबर 2066 – 19 नवंबर 2067: सूर्य की महादशा में शनि की अंतर्दशा सूर्य और शनि के बीच स्वाभाविक घर्षण लाती है: कड़ी मेहनत, वरिष्ठों का दबाव और धीमे परिणाम। धैर्य, अनुशासन और अधिकार के प्रति सम्मान आपको ठोस लाभ तक ले जाते हैं।
- **बुध** · 19 नवंबर 2067 – 24 सितंबर 2068: सूर्य की महादशा में बुध की अंतर्दशा बुद्धि, संवाद और व्यापार के अनुकूल है। पढ़ाई, लेखन, व्यापार और प्रशासनिक काम के लिए अच्छा है। स्पष्ट रूप से रखे गए विचारों पर ध्यान दिया जाता है।
- **केतु** · 24 सितंबर 2068 – 30 जनवरी 2069: सूर्य की महादशा में केतु की अंतर्दशा वैराग्य, अप्रत्याशित बदलाव या आध्यात्मिक रुचि ला सकती है। प्रतिष्ठा अनिश्चित लग सकती है। सादगी से रहें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें और समय का उपयोग आत्म-चिंतन के लिए करें।
- **शुक्र** · 30 जनवरी 2069 – 31 जनवरी 2070: सूर्य की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा सुख-सुविधा, संबंध और रचनात्मक कार्य लाती है, हालाँकि सूर्य और शुक्र स्वाभाविक मित्र नहीं हैं। जीवन के आनंद लें, पर कर्तव्य और आनंद में संतुलन रखें।

चंद्र महादशा · 31 जनवरी 2070 – 31 जनवरी 2080 · आयु 68–78

चंद्र की महादशा में, चंद्र आपके तीसरे भाव में होने से संवाद, छोटी यात्राएँ और रचनात्मक शौक फलते-फूलते हैं। भाई-बहनों और मित्रों से जुड़े रहें।

क्या करें: लिखें, रचें और छोटी यात्राएँ करें। किससे बचें: बिखरा प्रयास। सबसे अच्छा उपयोग: रचनात्मक काम।

- **चंद्र** · 31 जनवरी 2070 – 1 दिसंबर 2070: चंद्र की महादशा में चंद्र की ही अंतर्दशा। भावनाओं, घर, माता और सार्वजनिक जीवन पर जोर रहता है। यह संवेदनशील, देखभाल भरा समय है; परिवार, संपत्ति और लोगों से जुड़े काम के लिए अच्छा है। आराम और दिनचर्या से अपनी मनोदशा की रक्षा करें।
- **मंगल** · 1 दिसंबर 2070 – 2 जुलाई 2071: चंद्र की महादशा में मंगल की अंतर्दशा कमाने और भावनाओं पर अमल करने की ऊर्जा लाती है। संपत्ति, व्यापार और साहसी निर्णयों के लिए अच्छा है। भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ तेज़ हो सकती हैं; जवाब देने से पहले रुकें।
- **राहु** · 2 जुलाई 2071 – 31 दिसंबर 2072: चंद्र की महादशा में राहु की अंतर्दशा मन को बेचैन, महत्वाकांक्षी या चिंतित कर सकती है। विदेशी संबंध, नई इच्छाएँ और अचानक बदलाव संभव हैं। ध्यान और स्पष्ट लक्ष्य आपको ज़मीन से जोड़े रखते हैं।
- **गुरु** · 31 दिसंबर 2072 – 2 मई 2074: चंद्र की महादशा में गुरु की अंतर्दशा प्रायः बहुत सकारात्मक होती है: ज्ञान, भावनात्मक स्थिरता, पारिवारिक सुख, अच्छे निर्णय और आध्यात्मिक विकास।
- **शनि** · 2 मई 2074 – 1 दिसंबर 2075: चंद्र की महादशा में शनि की अंतर्दशा ज़िम्मेदारी के माध्यम से भावनात्मक परिपक्वता लाती है। काम भारी और मन गंभीर लग सकता है। दिनचर्या, धैर्य और दूसरों का सहयोग बहुत मदद करते हैं।
- **बुध** · 1 दिसंबर 2075 – 2 मई 2077: चंद्र की महादशा में बुध की अंतर्दशा सीखने, संवाद, व्यापार और सामाजिक जीवन के अनुकूल है। मन सक्रिय और जिज्ञासु रहता है; ज़रूरत से ज़्यादा सोचने से बचें।
- **केतु** · 2 मई 2077 – 1 दिसंबर 2077: चंद्र की महादशा में केतु की अंतर्दशा भावनात्मक वैराग्य, आत्म-चिंतन या आध्यात्मिक रुचि ला सकती है। कुछ भ्रम संभव है; शांत साधनाएँ मदद करती हैं।
- **शुक्र** · 1 दिसंबर 2077 – 1 अगस्त 2079: चंद्र की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा सुख-सुविधा, संबंध, कला और आनंद लाती है। पारिवारिक जीवन, वाहन, घर और प्रेम के लिए अच्छा है।
- **सूर्य** · 1 अगस्त 2079 – 31 जनवरी 2080: चंद्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा अधिकार, पहचान और पिता या वरिष्ठों पर ध्यान लाती है। करियर की प्रगति और आत्मविश्वास के लिए अच्छा है।

मंगल महादशा · 31 जनवरी 2080 – 31 जनवरी 2087 · आयु 78-85

मंगल की महादशा में, मंगल आपके तीसरे भाव में होने से साहस और पहल अपने सर्वश्रेष्ठ पर होते हैं। खेल, कौशल, उद्यमिता और साहसी कदमों के लिए उत्तम अवधि है।

क्या करें: उद्यम शुरू करें और साहसी कदम उठाएँ। किससे बचें: लापरवाही। सबसे अच्छा उपयोग: उद्यमिता।

- **मंगल** · 31 जनवरी 2080 – 28 जून 2080: मंगल की महादशा में मंगल की ही अंतर्दशा। ऊर्जा, साहस और लगन चरम पर होते हैं। प्रतिस्पर्धा, संपत्ति, खेल और तकनीकी उपलब्धि के लिए उत्तम है। क्रोध, चोट और आवेश में लिए निर्णयों से सावधान रहें।
- **राहु** · 28 जून 2080 – 17 जुलाई 2081: मंगल की महादशा में राहु की अंतर्दशा तीव्र महत्वाकांक्षा, साहसी कदम और असामान्य अवसर लाती है। यह आवेश या टकराव भी ला सकती है। इस ऊर्जा को सावधानी से सुनियोजित परियोजनाओं में लगाएँ।
- **गुरु** · 17 जुलाई 2081 – 23 जून 2082: मंगल की महादशा में गुरु की अंतर्दशा साहस को ज्ञान से जोड़ती है। नेतृत्व, शिक्षा, संपत्ति और नैतिक सफलता के लिए अच्छा है।
- **शनि** · 23 जून 2082 – 1 अगस्त 2083: मंगल की महादशा में शनि की अंतर्दशा गति और देरी के बीच घर्षण लाती है। कड़ा तकनीकी काम और लगन पुरस्कृत होते हैं; झुँझलाहट और जोखिम भरी शारीरिक गतिविधियों से बचें।
- **बुध** · 1 अगस्त 2083 – 29 जुलाई 2084: मंगल की महादशा में बुध की अंतर्दशा तकनीकी कौशल, तेज़ सोच और व्यापार में सहायक है। बहस में तीखी वाणी पर ध्यान दें।
- **केतु** · 29 जुलाई 2084 – 25 दिसंबर 2084: मंगल की महादशा में केतु की अंतर्दशा अचानक घटनाएँ, जल्दबाज़ी के निर्णय और वैराग्य ला सकती है। स्वास्थ्य, दुर्घटनाओं और क्रोध के प्रति सावधान रहें।
- **शुक्र** · 25 दिसंबर 2084 – 24 फ़रवरी 2086: मंगल की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा उत्साह, संबंध, सुख-सुविधा और रचनात्मक ऊर्जा लाती है। प्रेम, वाहन और आनंद के लिए अच्छा है; संतुलन रखें।
- **सूर्य** · 24 फ़रवरी 2086 – 2 जुलाई 2086: मंगल की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा आपके प्रयासों में अधिकार और पहचान जोड़ती है। नेतृत्व, सरकारी काम और आत्मविश्वास के लिए अच्छा है।
- **चंद्र** · 2 जुलाई 2086 – 31 जनवरी 2087: मंगल की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनाएँ, परिवार और कमाई केंद्र में लाती है। संपत्ति और व्यापार के लिए अच्छा है; मनोदशा के उतार-चढ़ाव संभालें।

राहु महादशा • 31 जनवरी 2087 – 31 जनवरी 2105 • आयु 85-103

राहु की महादशा में, राहु आपके दसवें भाव में होने से करियर की प्रबल महत्वाकांक्षा और असामान्य सफलता संभव है। अपने तरीके नैतिक रखें।

क्या करें: करियर के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को नैतिक तरीके से पाएँ। किससे बचें: शॉर्टकट। सबसे अच्छा उपयोग: प्रसिद्धि।

- **राहु** • 31 जनवरी 2087 – 13 अक्टूबर 2089: राहु की महादशा में राहु की ही अंतर्दशा। महत्वाकांक्षा, इच्छा और असामान्य अनुभव चरम पर होते हैं। विदेशी संबंध, तकनीक या अचानक बदलाव की संभावना है। ज़मीन से जुड़े, ईमानदार रहें और शॉर्टकट से सावधान रहें।
- **गुरु** • 13 अक्टूबर 2089 – 8 मार्च 2092: राहु की महादशा में गुरु की अंतर्दशा बेचैन दौर में ज्ञान और अच्छा मार्गदर्शन लाती है। पढ़ाई, मार्गदर्शकों, नैतिक विकास और पारिवारिक मामलों के लिए अच्छा है।
- **शनि** • 8 मार्च 2092 – 13 जनवरी 2095: राहु की महादशा में शनि की अंतर्दशा कड़ी मेहनत, ज़िम्मेदारी और अनुशासन लाती है। परिणाम धीरे पर ठोस आते हैं; शॉर्टकट से बचें और धैर्य रखें।
- **बुध** • 13 जनवरी 2095 – 1 अगस्त 2097: राहु की महादशा में बुध की अंतर्दशा तकनीक, संवाद, व्यापार और चतुर रणनीतियों के अनुकूल है। तथ्य और समझौते दोबारा जाँचें।
- **केतु** • 1 अगस्त 2097 – 19 अगस्त 2098: राहु की महादशा में केतु की अंतर्दशा भ्रमित या दिशाहीन लग सकती है। यह बड़े निर्णयों के बजाय आत्म-चिंतन का समय है; आध्यात्मिक साधना मदद करती है।
- **शुक्र** • 19 अगस्त 2098 – 20 अगस्त 2101: राहु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा संबंध, सुख-सुविधा, रचनात्मकता और सामाजिक जीवन लाती है। इच्छाएँ प्रबल रहती हैं; संतुलन और ईमानदारी रखें।
- **सूर्य** • 20 अगस्त 2101 – 15 जुलाई 2102: राहु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा पहचान की महत्वाकांक्षा लाती है, कभी अहंकार के टकराव या अपनी पहचान को लेकर भ्रम के साथ। ईमानदारी आपको सही राह पर रखती है।
- **चंद्र** • 15 जुलाई 2102 – 14 जनवरी 2104: राहु की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनाओं को बेचैन और विचारों को व्यस्त कर सकती है। घर या दिशा में बदलाव संभव हैं; दिनचर्या मदद करती है।
- **मंगल** • 14 जनवरी 2104 – 31 जनवरी 2105: राहु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा साहसी कर्म, ऊर्जा और प्रतिस्पर्धी भावना लाती है। पहल के लिए अच्छा है; आवेश में जोखिम और टकराव से बचें।

भाग 2 • आपका फलादेश • 13

साढ़ेसाती, ढैया और बड़े गोचर

कन्या लग्न के लिए शनि पाँचवें (बुद्धि) और छठे (सेवा) भाव के स्वामी हैं: उनकी दशाएँ अनुशासित पढ़ाई और कड़ी मेहनत का पुरस्कार देती हैं।

साढ़ेसाती 1: 15 नवंबर 2011 – 24 जनवरी 2020 (आयु 10–18) (बीत चुकी)

आरंभ चरण (चंद्र से बारहवाँ) (15 नवंबर 2011 से): आरंभिक चरण आपके दूसरे भाव में पड़ता है: पारिवारिक धन, बचत और वाणी पर ध्यान। सावधानी से खर्च करें।

शिखर चरण (चंद्र राशि पर) (3 नवंबर 2014 से): चरम चरण आपके तीसरे भाव में पड़ता है: प्रयास कठिन पर उत्पादक रहता है। साहस बढ़ता है।

अंतिम चरण (चंद्र से दूसरा) (27 जनवरी 2017 से): उतरता चरण आपके चौथे भाव में पड़ता है: घर का जीवन धीरे-धीरे स्थिर होता है।

साढ़ेसाती 2: 28 जनवरी 2041 – 4 दिसंबर 2049 (आयु 39–48)

आरंभ चरण (चंद्र से बारहवाँ) (28 जनवरी 2041 से): आरंभिक चरण आपके दूसरे भाव में पड़ता है: पारिवारिक धन, बचत और वाणी पर ध्यान। सावधानी से खर्च करें।

शिखर चरण (चंद्र राशि पर) (12 दिसंबर 2043 से): चरम चरण आपके तीसरे भाव में पड़ता है: प्रयास कठिन पर उत्पादक रहता है। साहस बढ़ता है।

अंतिम चरण (चंद्र से दूसरा) (8 दिसंबर 2046 से): उतरता चरण आपके चौथे भाव में पड़ता है: घर का जीवन धीरे-धीरे स्थिर होता है।

शनि की ढाई साल की अवधियाँ (ढैया)

- अष्टम शनि (चंद्र से आठवाँ): 23 जुलाई 2002 – 8 जनवरी 2003 (आयु 1) (बीत चुकी)
- अष्टम शनि (चंद्र से आठवाँ): 8 अप्रैल 2003 – 6 सितंबर 2004 (आयु 2) (बीत चुकी)
- अष्टम शनि (चंद्र से आठवाँ): 13 जनवरी 2005 – 26 मई 2005 (आयु 3) (बीत चुकी)
- कंटक शनि (चंद्र से चौथा): 29 अप्रैल 2022 – 12 जुलाई 2022 (आयु 21) (बीत चुकी)
- कंटक शनि (चंद्र से चौथा): 18 जनवरी 2023 – 30 मार्च 2025 (आयु 21) (बीत चुकी)
- अष्टम शनि (चंद्र से आठवाँ): 31 मई 2032 – 13 जुलाई 2034 (आयु 31)

अष्टम शनि चंद्र से आठवें भाव में शनि का ढाई वर्ष का गोचर है। यह देरी, अचानक बदलाव और भावनात्मक भारीपन ला सकता है। यह धैर्य, स्वास्थ्य की देखभाल, निवेश में सावधानी और स्थिर दिनचर्या का समय है, बड़े दाँव का नहीं।

कंटक शनि चंद्र से चौथे भाव में शनि का ढाई वर्ष का गोचर है। यह घर, मन की शांति, पढ़ाई या संपत्ति को लेकर दबाव ला सकता है। शांत दिनचर्या और संपत्ति के बड़े जोखिमों से बचना मदद करता है।

आने वाले वर्षों में गुरु की चाल

- 31 अक्टूबर 2026 से गुरु सिंह में (चंद्र से दसवें भाव में): चंद्र से दसवें भाव में गुरु: करियर में बदलाव या नई ज़िम्मेदारियाँ। सबसे अच्छे परिणामों के लिए कड़ी मेहनत करें और विनम्र रहें।
- 25 जनवरी 2027 से गुरु कर्क में (चंद्र से नौवें भाव में): चंद्र से नौवें भाव में गुरु: भाग्य, उच्च शिक्षा, यात्रा, मार्गदर्शकों और आध्यात्मिक विकास के लिए भाग्यशाली गोचर।
- 27 नवंबर 2027 से गुरु कन्या में (चंद्र से ग्यारहवें भाव में): चंद्र से ग्यारहवें भाव में गुरु: लाभ, इच्छाओं की पूर्ति और सहायक मित्रों के लिए उत्कृष्ट गोचर।
- 26 दिसंबर 2028 से गुरु तुला में (चंद्र से बारहवें भाव में): चंद्र से बारहवें भाव में गुरु: अच्छे कार्यों, यात्रा या आध्यात्मिक गतिविधियों पर खर्च। आत्म-चिंतन का अच्छा समय।

- **25 जनवरी 2030 से गुरु वृश्चिक में** (चंद्र से पहले भाव में): चंद्र राशि पर गुरु: आशावाद और वृद्धि लौटती है, हालाँकि बेचैनी संभव है। सीखने, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और नई शुरुआत के लिए अच्छा।
- **17 फ़रवरी 2031 से गुरु धनु में** (चंद्र से दूसरे भाव में): चंद्र से दूसरे भाव में गुरु: धन, पारिवारिक सुख और अच्छी वाणी के लिए बहुत अच्छा गोचर। बचत और पारिवारिक आयोजन अनुकूल हैं।
- **5 मार्च 2032 से गुरु मकर में** (चंद्र से तीसरे भाव में): चंद्र से तीसरे भाव में गुरु: प्रगति धीमी लग सकती है। प्रयास जारी रखें और अनावश्यक बदलावों से बचें।
- **18 मार्च 2033 से गुरु कुंभ में** (चंद्र से चौथे भाव में): चंद्र से चौथे भाव में गुरु: घर के मामलों, संपत्ति और परिवार पर ध्यान चाहिए। मन की शांति धैर्य से आती है।
- **28 मार्च 2034 से गुरु मीन में** (चंद्र से पाँचवें भाव में): चंद्र से पाँचवें भाव में गुरु: पढ़ाई, रचनात्मकता, प्रेम, संतान और अच्छे निर्णयों के लिए उत्कृष्ट गोचर।
- **6 अप्रैल 2035 से गुरु मेष में** (चंद्र से छठे भाव में): चंद्र से छठे भाव में गुरु: काम के दबाव और स्वास्थ्य पर ध्यान चाहिए। ऋण और विवादों से बचें।
- **15 अप्रैल 2036 से गुरु वृषभ में** (चंद्र से सातवें भाव में): चंद्र से सातवें भाव में गुरु: विवाह, साझेदारी, व्यापार और जनसंपर्क के लिए बहुत अच्छा गोचर।
- **10 सितंबर 2036 से गुरु मिथुन में** (चंद्र से आठवें भाव में): चंद्र से आठवें भाव में गुरु: शांत समय। शोध, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास पर ध्यान दें, और जोखिम भरे निवेश से बचें।

भाग 2 • आपका फलादेश • 14

रिपोर्ट को अपने अतीत से मिलाएँ

इस खंड से रिपोर्ट को अपने जीवन से मिलाकर देखें। यदि इनमें से अधिकतर अवधियाँ आपकी यादों से मेल खाती हैं, तो आपका जन्म समय सही है और आप भविष्य की तारीखों पर अधिक भरोसा कर सकते हैं।

- **13 अक्टूबर 2006 – 22 नवंबर 2007 (शनि-केतु, आयु 5):** ध्यान घर, माता और विद्यालय या घर में बदलाव पर। शनि की महादशा में केतु की अंतर्दशा वैराग्य, आत्म-चिंतन और संभावित भ्रम लाती है।
- **22 नवंबर 2007 – 22 जनवरी 2011 (शनि-शुक्र, आयु 6):** ध्यान दूसरों से संबंध और मित्रता पर। शनि की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा अक्सर इस दशा की सबसे अच्छी अवधियों में से एक होती है: सुख-सुविधा, संबंध, रचनात्मकता और स्थिर लाभ।
- **22 जनवरी 2011 – 4 जनवरी 2012 (शनि-सूर्य, आयु 9):** ध्यान दूसरों से संबंध और मित्रता पर। शनि की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा अधिकारियों या पिता-समान लोगों से घर्षण ला सकती है।
- **4 जनवरी 2012 – 4 अगस्त 2013 (शनि-चंद्र, आयु 10):** ध्यान भाई-बहन, शौक और खेल के साथी पर। शनि की महादशा में चंद्र की अंतर्दशा भावनाओं को भारी या गंभीर बना सकती है।
- **4 अगस्त 2013 – 13 सितंबर 2014 (शनि-मंगल, आयु 12):** ध्यान भाई-बहन, शौक और खेल के साथी पर। शनि की महादशा में मंगल की अंतर्दशा धीमे दौर में ऊर्जा लाती है; तकनीकी काम और संपत्ति के मामले आगे बढ़ते हैं, पर झुंझलाहट से बचें।
- **13 सितंबर 2014 – 20 जुलाई 2017 (शनि-राहु, आयु 13):** ध्यान करियर का चुनाव, इंटरशिप और महत्वाकांक्षा पर। शनि की महादशा में राहु की अंतर्दशा महत्वाकांक्षा, असामान्य अवसर और कुछ भ्रम लाती है।
- **20 जुलाई 2017 – 31 जनवरी 2020 (शनि-गुरु, आयु 16):** ध्यान उच्च शिक्षा, मार्गदर्शक और आस्था पर। शनि की महादशा में गुरु की अंतर्दशा अनुशासित दौर में ज्ञान, मार्गदर्शक और विकास लाती है।
- **31 जनवरी 2020 – 29 जून 2022 (बुध-बुध, आयु 18):** ध्यान प्रतियोगिता, परीक्षाएँ और दिनचर्या पर। बुध की महादशा में बुध की ही अंतर्दशा।
- **29 जून 2022 – 26 जून 2023 (बुध-केतु, आयु 21):** ध्यान पढ़ाई, घर की शांति और सुख-सुविधा पर। बुध की महादशा में केतु की अंतर्दशा आत्म-चिंतन, शोध में रुचि और संवाद में कुछ भ्रम लाती है।
- **26 जून 2023 – 26 अप्रैल 2026 (बुध-शुक्र, आयु 22):** ध्यान गंभीर संबंध, विवाह और व्यापारिक साझेदार पर। बुध की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा रचनात्मकता, संबंध, सुख-सुविधा और लाभ लाती है।
- **26 अप्रैल 2026 – 2 मार्च 2027 (बुध-सूर्य, आयु 25):** ध्यान गंभीर संबंध, विवाह और व्यापारिक साझेदार पर। बुध की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा आपकी बुद्धि की पहचान और नेतृत्व के अवसर लाती है।

यदि इनमें से तीन या अधिक बिल्कुल मेल नहीं खातीं, तो आपका जन्म समय कुछ मिनट आगे-पीछे हो सकता है; परिवार के रिकॉर्ड या जन्म प्रमाणपत्र से जाँच लें।

आपकी कुंडली के उपाय

उपाय आपका भाग्य नहीं बदलते; वे आपको उसके साथ बेहतर ढंग से चलने में मदद करते हैं। नीचे दिया हर उपाय आपकी अपनी कुंडली से चुना गया है: आपकी लग्न के स्वामी, कमजोर ग्रह, आपकी वर्तमान दशा के ग्रह और कोई भी दोष। आपको सब कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। इस खंड के अंत में दी गई **दैनिक दिनचर्या** से शुरू करें, फिर एक-दो और उपाय जोड़ें जो आपको सही लगें।

आपके शुभ कारक

- **स्वामी ग्रह (लग्न स्वामी):** बुध
- **शुभ दिन:** बुधवार
- **शुभ रंग:** हरा
- **शुभ अंक:** 5 (आपका मूलांक 5 है)
- **शुभ दिशा:** उत्तर (पूजा या पढ़ाई करते समय इस ओर मुख करें)
- **आराध्य देवता:** गणेश जी और भगवान विष्णु
- **जीवन रत्न:** पन्ना

रत्न

रत्न किसी ग्रह को बल देता है, उसे शांत नहीं करता। इसलिए रत्न केवल उन ग्रहों के लिए पहना जाता है जो आपकी लग्न के मित्र हैं, कठिन भावों के स्वामी ग्रहों के लिए कभी नहीं।

- **जीवन रत्न (मुख्य): पन्ना** (बुध के लिए)। सस्ता विकल्प (उपरत्न): पेरिडॉट या हरा टूमलाइन। धातु: सोना या चाँदी। उंगली: दाएँ हाथ की कनिष्ठा (बाएँ हाथ से काम करते हों तो बायाँ हाथ)। वजन: लगभग 3 से 6 कैरेट। पहली बार बुधवार सुबह, सूर्योदय के दो घंटे के भीतर पहनें, ॐ बुधाय नमः 108 बार जपने के बाद।
- **शुभ रत्न (दूसरा): नीलम** (शनि के लिए)। सस्ता विकल्प (उपरत्न): जामुनिया (एमेथिस्ट) या नीला स्पिनेल। धातु: चाँदी, लोहा या पंचधातु। उंगली: दाएँ हाथ की मध्यमा (बाएँ हाथ से काम करते हों तो बायाँ हाथ)। वजन: लगभग 3 से 5 कैरेट। पहली बार शनिवार शाम, सूर्यास्त के बाद पहनें, ॐ शं शनैश्चराय नमः 108 बार जपने के बाद। नीलम सबसे शक्तिशाली रत्न है, इसलिए पहले उपरत्न (जामुनिया) से शुरू करें और नीलम केवल तब पहनें जब कोई अनुभवी ज्योतिषी आपकी पूरी कुंडली देखकर पुष्टि करें।
- **भाग्य रत्न (वैकल्पिक): हीरा या सफ़ेद पुखराज** (शुक्र के लिए)। सस्ता विकल्प (उपरत्न): ओपल या सफ़ेद ज़िरकॉन। धातु: चाँदी या प्लैटिनम। उंगली: दाएँ हाथ की मध्यमा (बाएँ हाथ से काम करते हों तो बायाँ हाथ)। वजन: लगभग हीरा 0.5 से 1 कैरेट, सफ़ेद पुखराज 3 से 5 कैरेट। पहली बार शुक्रवार सुबह, सूर्योदय के दो घंटे के भीतर पहनें, ॐ शुक्राय नमः 108 बार जपने के बाद।

इनसे बचें: माणिक्य (रूबी) (सूर्य के लिए, जो आपके बारहवें भाव के स्वामी हैं); मूंगा (मंगल के लिए, जो आपके तीसरे भाव और आठवें भाव के स्वामी हैं)। इन्हें पहनने से उन भावों की समस्याएँ बढ़ सकती हैं।

विशेषज्ञ की सलाह के बिना न पहनें: नीलम, गोमेद और लहसुनिया बहुत तेज़ और प्रबल असर करते हैं। इन्हें केवल किसी अनुभवी ज्योतिषी की पुष्टि के बाद पहनें, और पहले तीन रात तकिए के नीचे रखकर देखें कि आप कैसा महसूस करते हैं।

खरीदने से पहले: केवल प्राकृतिक, बिना ट्रीटमेंट वाला और लैब प्रमाणपत्र (जैसे GIA या IGI) वाला रत्न लें। रत्न त्वचा को छूना चाहिए। महँगा रत्न ज़रूरी नहीं: साफ़, प्रमाणित उपरत्न सस्ते घटिया मुख्य रत्न से बेहतर है। **बजट कम हो तो रत्न बिल्कुल छोड़ दें; नीचे दिए मंत्र और दान बिना रत्न के भी काम करते हैं।**

अपने कमजोर ग्रहों को बल दें

आपकी कुंडली में इन ग्रहों के अंक सबसे कम आए। इन्हें बल देने से सबसे अधिक सुधार होता है।

चंद्र: बल 2.0/10 (निर्बल)

- **दैनिक आदत:** सोने का समय तय रखें, और सोने से पहले के आखिरी 20 मिनट फ़ोन से दूर रहें।
- **साप्ताहिक:** सोमवार को अपनी माता को फ़ोन करें या उनके साथ समय बिताएँ, या कुछ देर जल के पास बैठें।

- **बीज मंत्र:** ॐ श्रां श्रीं श्रीं सः चंद्रमसे नमः। सोमवार को 108 बार (एक माला) जपें, या हो सके तो रोज़। इस ग्रह की पारंपरिक पूर्ण संख्या 11,000 है, जो कई सप्ताह में पूरी की जाती है।
- **छोटा मंत्र (व्यस्त दिनों के लिए):** ॐ सोमाय नमः, 11 बार।
- **पूजा:** सोमवार को शिवलिंग पर जल या दूध चढ़ाएँ और 108 बार ॐ नमः शिवाय जपें। देवता: भगवान शिव।
- **व्रत:** सोमवार (दूध, फल और एक सादा भोजन)। कोई स्वास्थ्य समस्या हो तो व्रत न रखें।
- **दान:** चावल, दूध, सफ़ेद वस्त्र या चाँदी, सोमवार को।
- **रंग:** सोमवार को सफ़ेद, क्रीम और चाँदी जैसा रंग पहनें।
- **रुद्राक्ष:** 2 मुखी, सोमवार को सरल प्रार्थना के बाद धारण करें।

बुध: बल 4.0/10 (निर्बल)

- **दैनिक आदत:** बोलने और लिखने का अभ्यास करें: जो सीखें वह किसी को समझाएँ, और हर महत्वपूर्ण बातचीत से पहले तैयारी करें।
- **साप्ताहिक:** बुधवार को 30 मिनट अपने कागज़ात, हिसाब या नोट्स व्यवस्थित करें।
- **बीज मंत्र:** ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः। बुधवार को 108 बार (एक माला) जपें, या हो सके तो रोज़। इस ग्रह की पारंपरिक पूर्ण संख्या 9,000 है, जो कई सप्ताह में पूरी की जाती है।
- **छोटा मंत्र (व्यस्त दिनों के लिए):** ॐ बुधाय नमः, 11 बार।
- **पूजा:** बुधवार को 108 बार ॐ गं गणपतये नमः जपें, या विष्णु सहस्रनाम पढ़ें। देवता: गणेश जी और भगवान विष्णु।
- **व्रत:** बुधवार (हल्का शाकाहारी भोजन)। कोई स्वास्थ्य समस्या हो तो व्रत न रखें।
- **दान:** हरी मूंग दाल, हरी सब्जियाँ, या विद्यार्थियों को किताबें और लेखन सामग्री, बुधवार को।
- **रंग:** बुधवार को हरा रंग पहनें।
- **रुद्राक्ष:** 4 मुखी, बुधवार को सरल प्रार्थना के बाद धारण करें।

गुरु: बल 5.0/10 (मध्यम)

- **दैनिक आदत:** सीखते रहें, और अपने शिक्षकों तथा बड़ों का सम्मान करें।
- **साप्ताहिक:** गुरुवार को किसी विद्यार्थी की मदद करें, किसी को पढ़ाएँ, या किसी शैक्षिक कार्य के लिए दान करें।
- **बीज मंत्र:** ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः गुरवे नमः। गुरुवार को 108 बार (एक माला) जपें, या हो सके तो रोज़। इस ग्रह की पारंपरिक पूर्ण संख्या 19,000 है, जो कई सप्ताह में पूरी की जाती है।
- **छोटा मंत्र (व्यस्त दिनों के लिए):** ॐ बृहस्पतये नमः, 11 बार।
- **पूजा:** गुरुवार को घी का दीपक जलाकर ॐ नमो भगवते वासुदेवाय जपें; शिक्षकों का सम्मान करें। देवता: भगवान विष्णु और आपके गुरु।
- **व्रत:** गुरुवार (एक भोजन, चने की दाल जैसे पीले पदार्थ)। कोई स्वास्थ्य समस्या हो तो व्रत न रखें।
- **दान:** चने की दाल, हल्दी, केले, पीला वस्त्र, या विद्यार्थियों को किताबें, गुरुवार को।
- **रंग:** गुरुवार को पीला और सुनहरा रंग पहनें।
- **रुद्राक्ष:** 5 मुखी, गुरुवार को सरल प्रार्थना के बाद धारण करें।

आपकी वर्तमान दशा के उपाय

आप **बुध महादशा** (30 जनवरी 2037 तक) और **सूर्य अंतर्दशा** (2 मार्च 2027 तक) में हैं। इन दोनों ग्रहों को प्रसन्न रखने से पूरा समय सहज होता है।

- **बुध (महादशा स्वामी):** ऊपर दिया जा चुका है; अभी इस पर विशेष ध्यान दें।
- **सूर्य (अंतर्दशा स्वामी):** रविवार को ॐ हां हीं ह्रौं सः सूर्याय नमः 108 बार जपें; उगते सूर्य को जल अर्पित करें (सूर्य अर्घ्य) और रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र पढ़ें; रविवार को गेहूँ का दान करें।

आपकी अगली महादशा, **केतु**, 30 जनवरी 2037 से शुरू होगी। लगभग एक महीना पहले से मंगलवार को ॐ केतवे नमः जपना शुरू करें।

मांगलिक (मंगल) दोष के उपाय

आपका मांगलिक प्रभाव हल्का या आंशिक रूप से निरस्त है, इसलिए सरल उपाय पर्याप्त हैं।

- हर मंगलवार **हनुमान चालीसा** पढ़ें, और जब संभव हो हनुमान मंदिर जाएँ।
- मंगलवार को ॐ अंगारकाय नमः 108 बार जपें।
- मंगलवार को मसूर दाल या गुड़ का दान करें, और उस दिन मांसाहार और शराब से बचें।
- मंगल की ऊर्जा को खेल, व्यायाम या किसी चुनौतीपूर्ण काम में लगाएँ; क्रोध और बहस में सावधानी रखें, और वाहन ध्यान से चलाएँ।
- विवाह के लिए साथी की कुंडली का मिलान करें (गुण मिलान और मांगलिक जाँच)। साथी भी मांगलिक हो तो दोष संतुलित हो जाता है।

आपकी 10 मिनट की दैनिक दिनचर्या

1. **जागते ही:** कुछ गहरी साँसें लें, फिर अपनी हथेलियाँ देखें और दिन का लक्ष्य याद करें।
2. **सुबह:** 5 से 10 मिनट सुबह की धूप लें।
3. **मंत्र:** ॐ बुधाय नमः (आपकी लग्न के स्वामी) 11 बार, और ॐ सोमाय नमः (आपका सबसे कमजोर ग्रह) 11 बार जपें।
4. **आदत:** सोने का समय तय रखें, और सोने से पहले के आखिरी 20 मिनट फ़ोन से दूर रहें।
5. **साप्ताहिक:** सोमवार को चंद्र का दान करें; बुधवार को हरा रंग पहनें और गणेश जी और भगवान विष्णु की पूजा करें।
6. **शाम:** घर में दीपक जलाएँ, और दो मिनट सोचें कि आज क्या अच्छा हुआ।

अपने सबसे बलवान ग्रहों का उपयोग करें

- **शुक्र:** बलवान शुक्र को और मज़बूत करने के लिए नियमित रूप से कुछ सुंदर रचें।
- **मंगल:** बलवान मंगल को और मज़बूत करने के लिए कोई खेल या चुनौतीपूर्ण परियोजना अपनाएँ।

एक सावधानी

कोई भी सच्चा उपाय बड़ी रकम नहीं माँगता, और कोई उपाय छोड़ देने से कुछ बुरा नहीं होता। जो डर दिखाकर पूजा या रत्न बेचे, उससे सावधान रहें। उपाय आपके अपने प्रयास, ईमानदारी और दूसरों की परवाह के साथ सबसे अच्छा काम करते हैं, और वे कभी चिकित्सा, कानूनी या वित्तीय सलाह का विकल्प नहीं हैं।

भाग 2 • आपका फलादेश • 16

आपके अंक (संक्षिप्त अंक ज्योतिष)

मूलांक 5

मूलांक 5 (बुध): आप हाज़िरजवाब, लचीले और संवाद-कुशल हैं। आपको विविधता, यात्रा और व्यापार पसंद है। एकाग्रता और काम पूरा करना आपके सबसे अच्छे परिणाम लाते हैं।

भाग्यांक 2

भाग्यांक 2 (चंद्र): आपके भाग्य में साझेदारी, देखभाल और कूटनीति है। आप दूसरों के साथ मिलकर सफल होते हैं।

भाग 3 - अपनी कुंडली को समझें

इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

इस रिपोर्ट के तीन भाग हैं। **भाग 1** में आपका जन्म विवरण है: ग्रहों की सटीक स्थिति, आपकी कुंडलियाँ और दशा-क्रम। **भाग 2** आपका व्यक्तिगत फलादेश है, जो आपकी कुंडली के योगों से लिखा गया है। **भाग 3** यह मार्गदर्शिका है, जो फलादेश के पीछे के सिद्धांत समझाती है ताकि आप अपनी कुंडली स्वयं समझ सकें।

पढ़ने का अच्छा तरीका

- **आपकी कुंडली एक नजर में** से शुरू करें। इसमें कुछ पन्नों में मुख्य बातें हैं।
- फिर वे भाग पढ़ें जो अभी आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं, जैसे करियर, संबंध या वर्तमान दशा।
- **अपने अतीत से इस रिपोर्ट को परखें** अवश्य पढ़ें। यदि बीते समय की बातें आपके जीवन से मेल खाती हैं, तो भविष्य की तारीखों पर अधिक भरोसा किया जा सकता है।
- हर कुछ महीनों में समय-रेखा वाले भाग फिर पढ़ें; वे तारीखों के साथ लिखे गए हैं ताकि जीवन आगे बढ़ने पर आप उन्हें जाँच सकें।

याद रखने योग्य बात

ज्योतिष प्रवृत्तियाँ और समय बताता है, अटल भाग्य नहीं। आपका प्रयास, आपके निर्णय और आपके मूल्य हमेशा मायने रखते हैं। इस रिपोर्ट को स्वयं को समझने और योजना बनाने के मार्गदर्शक की तरह उपयोग करें, डरने या प्रयास छोड़ने के कारण की तरह नहीं।

कुंडली क्या है?

कुंडली (जन्म कुंडली या जन्मपत्री) आपके जन्म के सटीक क्षण और स्थान पर आकाश का नक्शा है। इसमें दिखता है कि सूर्य, चंद्र और ग्रह कहाँ थे, पूर्वी क्षितिज पर कौन-सी राशि उदित हो रही थी, और चंद्रमा किस नक्षत्र में था।

आपकी कुंडली किससे बनती है

- **जन्म तिथि, समय और स्थान।** समय से आपका लग्न और भावों की स्थिति तय होती है; कुछ मिनट का अंतर भी विवरण बदल सकता है। स्थान से अक्षांश, देशांतर और समय क्षेत्र तय होते हैं।
- **अयनांश।** वैदिक ज्योतिष निरयन राशिचक्र का उपयोग करता है, जो स्थिर तारों के अनुसार चलता है। यह रिपोर्ट लाहिड़ी अयनांश का उपयोग करती है, जो भारत का आधिकारिक मानक है।
- **पूर्ण-राशि भाव पद्धति।** लग्न राशि से शुरू करके हर राशि एक भाव है।

उत्तर भारतीय कुंडली

इस रिपोर्ट में प्रयुक्त उत्तर भारतीय शैली में ऊपर का बीच वाला खाना हमेशा आपका पहला भाव (लग्न) होता है। इसके बाद भाव घड़ी की उल्टी दिशा में चलते हैं। हर भाव में लिखा अंक बताता है कि उस भाव में कौन-सी राशि है (1 = मेष, 2 = वृषभ ... 12 = मीन)। ग्रहों के संक्षिप्त नाम (सू, चं, मं, बु, गु, शु, श, रा, के) बताते हैं कि हर ग्रह कहाँ बैठा है, साथ में उसका अंश।

बारह भाव

भाव जीवन के बारह क्षेत्र हैं। किसी भाव में बैठा ग्रह अपनी ऊर्जा उस क्षेत्र में लाता है, और जो ग्रह किसी भाव का स्वामी है (भावेश), वह कुंडली में जहाँ भी जाता है, उस भाव के विषय वहाँ ले जाता है।

बारह भाव

- **पहला भाव (लग्न, तनु भाव):** आपका शरीर, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, रूप और जीवन की समग्र दिशा।
- **दूसरा भाव (धन भाव):** परिवार, धन, बचत, वाणी, खान-पान और प्रारंभिक शिक्षा।
- **तीसरा भाव (सहज/पराक्रम भाव):** साहस, प्रयास, भाई-बहन, संवाद, कौशल, शौक और छोटी यात्राएँ।

- **चौथा भाव (सुख भाव):** घर, माता, संपत्ति, वाहन, सुख, मन की शांति और विद्यालय की शिक्षा।
- **पाँचवाँ भाव (पुत्र भाव):** बुद्धि, पढ़ाई, रचनात्मकता, प्रेम, संतान और निवेश।
- **छठा भाव (रिपु भाव):** दैनिक कार्य, सेवा, प्रतिस्पर्धा, शत्रु, ऋण और स्वास्थ्य समस्याएँ।
- **सातवाँ भाव (कलत्र भाव):** विवाह, जीवनसाथी, व्यापारिक साझेदारी और जनता से व्यवहार।
- **आठवाँ भाव (आयु भाव):** अचानक बदलाव, परिवर्तन, शोध, छिपे विषय, विरासत और आयु।
- **नौवाँ भाव (भाग्य भाव):** भाग्य, पिता, गुरु, उच्च शिक्षा, धर्म, दर्शन और लंबी यात्राएँ।
- **दसवाँ भाव (कर्म भाव):** करियर, पद, प्रतिष्ठा, अधिकार और संसार में आपके कर्म।
- **ग्यारहवाँ भाव (लाभ भाव):** आय, लाभ, मित्र, संपर्क, बड़े भाई-बहन और इच्छाओं की पूर्ति।
- **बारहवाँ भाव (व्यय भाव):** खर्च, विदेश, नींद, एकांत, आध्यात्मिकता और मोक्ष।

भावों के समूह

- **केंद्र (1, 4, 7, 10)** कुंडली के स्तंभ हैं; यहाँ बैठे ग्रह बलवान और प्रत्यक्ष होते हैं।
- **त्रिकोण (1, 5, 9)** भाग्य और धर्म के भाव हैं; यहाँ बैठे ग्रह शुभ फल देते हैं।
- **दुःस्थान (6, 8, 12)** चुनौतियों के भाव हैं; यहाँ ग्रहों को अधिक मेहनत करनी पड़ती है, पर वे लचीलापन और संघर्ष के बाद सफलता भी दे सकते हैं।
- **उपचय (3, 6, 10, 11)** वृद्धि के भाव हैं; यहाँ कठिन ग्रह समय के साथ सुधरते हैं।

नौ ग्रह

वैदिक ज्योतिष नौ ग्रहों का उपयोग करता है। हर ग्रह का अपना स्वभाव है, वह कुछ लोगों और जीवन के क्षेत्रों का कारक है, और एक या दो राशियों का स्वामी है।

- **सूर्य:** आत्मा, आत्मविश्वास, अधिकार, पिता, सरकार, जीवन-शक्ति। सिंह के स्वामी।
- **चंद्र:** मन, भावनाएँ, माता, जनता, सुख, कल्पना। कर्क के स्वामी।
- **मंगल:** ऊर्जा, साहस, भाई-बहन, संपत्ति, इंजीनियरिंग, प्रतिस्पर्धा। मेष और वृश्चिक के स्वामी।
- **बुध:** बुद्धि, वाणी, व्यापार, सीखना, लेखन, मित्र। मिथुन और कन्या के स्वामी।
- **गुरु (बृहस्पति):** ज्ञान, गुरु, संतान, धन, धर्म, सौभाग्य। धनु और मीन के स्वामी।
- **शुक्र:** प्रेम, विवाह, सौंदर्य, कला, सुख-सुविधा, वाहन, विलासिता। वृषभ और तुला के स्वामी।
- **शनि:** अनुशासन, कड़ी मेहनत, देरी, आयु, सेवा, न्याय। मकर और कुंभ के स्वामी।
- **राहु:** महत्वाकांक्षा, इच्छा, विदेशी चीज़ें, तकनीक, अपरंपरागत बातें। छाया ग्रह।
- **केतु:** वैराग्य, आध्यात्मिकता, अंतर्ज्ञान, शोध, पूर्वजन्म के कौशल। छाया ग्रह।

नैसर्गिक शुभ और पाप ग्रह

गुरु, शुक्र, अच्छी स्थिति वाले बुध और उज्ज्वल चंद्र नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं: वे सुख और वृद्धि देते हैं। सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु नैसर्गिक पाप ग्रह हैं: वे चुनौतियाँ लाते हैं, पर साथ ही प्रेरणा, अनुशासन और उपलब्धि भी। आपकी कुंडली में कोई ग्रह क्या करता है, यह इस पर भी निर्भर है कि आपके लग्न के लिए वह किन भावों का स्वामी है, इसीलिए यह रिपोर्ट हमेशा स्वामित्व का उल्लेख करती है।

बारह राशियाँ

बारह राशियाँ तय करती हैं कि कोई ग्रह स्वयं को किस रंग में व्यक्त करता है।

- **मेष:** अग्नि तत्व, अग्रणी, तेज़, साहसी।
- **वृषभ:** पृथ्वी तत्व, स्थिर, व्यावहारिक, सुख-प्रिय।

- **मिथुन:** वायु तत्व, जिज्ञासु, संवाद-कुशल, बहुमुखी।
- **कर्क:** जल तत्व, स्नेही, भावुक, रक्षक।
- **सिंह:** अग्नि तत्व, स्वाभिमानी, उदार, नेतृत्वकारी।
- **कन्या:** पृथ्वी तत्व, विश्लेषणात्मक, सटीक, सेवाभावी।
- **तुला:** वायु तत्व, संतुलित, कूटनीतिक, कलात्मक।
- **वृश्चिक:** जल तत्व, गहन, निजी, परिवर्तनकारी।
- **धनु:** अग्नि तत्व, सिद्धांतवादी, आशावादी, दार्शनिक।
- **मकर:** पृथ्वी तत्व, महत्वाकांक्षी, अनुशासित, धैर्यवान।
- **कुंभ:** वायु तत्व, मौलिक, मानवतावादी, स्वतंत्र।
- **मीन:** जल तत्व, करुणामय, कल्पनाशील, आध्यात्मिक।

आपकी तीन मुख्य राशियाँ

आपकी **लग्न राशि** आपके शरीर और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बताती है। आपकी **चंद्र राशि** आपके मन और भावनाओं को बताती है, और इसी से दैनिक राशिफल तथा साढ़ेसाती देखी जाती है। आपकी **सूर्य राशि** (निरयन) आपके मूल स्वभाव और जीवन-शक्ति को बताती है। वैदिक ज्योतिष में लग्न और चंद्र राशि को सूर्य राशि से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

नक्षत्र: 27 चंद्र-मंज़िलें

राशिचक्र 13°20' के 27 नक्षत्रों में बँटा है। हर नक्षत्र का एक स्वामी ग्रह, एक देवता और एक प्रतीक है, और वह 4 चरणों (पादों) में बँटा है।

आपका नक्षत्र क्यों महत्वपूर्ण है

- आपका **जन्म नक्षत्र** (चंद्रमा का नक्षत्र) आपके भावनात्मक स्वभाव और सहज प्रवृत्तियों को बारीकी से बताता है।
- यही आपकी **विंशोत्तरी दशा** का क्रम तय करता है: जन्म नक्षत्र का स्वामी ग्रह आपकी पहली दशा चलाता है।
- इसका उपयोग **नामकरण** (नाम का पहला अक्षर), **विवाह मिलान** (गुण मिलान) और शुभ मुहूर्त चुनने में होता है।

इस रिपोर्ट में हर ग्रह के नक्षत्र का भी वर्णन है, जो उसकी राशि और भाव के अर्थ में एक और परत जोड़ता है।

ग्रहों का बल, स्थिति और स्वामित्व

हर ग्रह समान बल से काम नहीं करता। यह रिपोर्ट हर ग्रह को 0-10 का सरल बल-अंक देती है, जो इन बातों पर आधारित है:

- **स्थिति (गरिमा):** उच्च (सबसे बलवान), मूलत्रिकोण, स्वराशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, नीच (सबसे कमजोर)।
- **भाव:** केंद्र और त्रिकोण में ग्रह बलवान होते हैं; छठे, आठवें और बारहवें भाव में उन्हें अधिक मेहनत करनी पड़ती है।
- **अस्त:** सूर्य के बहुत निकट का ग्रह अपना कुछ स्वतंत्र बल खो देता है।
- **वर्गोत्तम:** जो ग्रह जन्म कुंडली (D1) और नवांश (D9) दोनों में एक ही राशि में हो, वह बलवान होता है।
- **नवांश में स्थिति:** D9 कुंडली में उच्च या नीच होना आंतरिक बल बढ़ाता या घटाता है।

स्वामित्व

आपके लग्न के लिए हर ग्रह एक या दो भावों का स्वामी है। किसी ग्रह की दशा उसके स्वामित्व वाले भावों के विषय वहाँ लाती है जहाँ वह बैठा है। इसीलिए एक ही ग्रह किसी के लिए अद्भुत और किसी के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

नीचभंग

कुछ शास्त्रीय स्थितियों में नीच ग्रह की कमजोरी निरस्त हो जाती है। ऐसे ग्रह अक्सर शुरू में कमजोर होते हैं और जीवन में आगे चलकर बलवान बनते हैं।

दशा: आपके जीवन का समय-चक्र

विंशोत्तरी दशा पद्धति जीवन को नौ ग्रहों द्वारा शासित अवधियों में बाँटती है, एक तय क्रम और तय अवधि में, कुल 120 वर्ष:

- केतु 7 वर्ष, शुक 20, सूर्य 6, चंद्र 10, मंगल 7, राहु 18, गुरु 16, शनि 19, बुध 17।

आपकी पहली दशा जन्म के समय चंद्रमा के नक्षत्र पर निर्भर करती है, और उसका कुछ भाग जन्म से पहले ही बीत चुका होता है (जन्म के समय दशा शेष)।

महादशा, अंतर्दशा

हर **महादशा** (मुख्य अवधि) नौ **अंतर्दशाओं** (उप-अवधियों) में उसी क्रम में बँटी होती है। महादशा समग्र विषय तय करती है; अंतर्दशा बताती है कि किसी समय क्या सक्रिय है। परिणाम इन पर निर्भर करते हैं:

- आपकी कुंडली में दोनों ग्रह कहाँ बैठे हैं और किन भावों के स्वामी हैं,
- उनका बल और आपसी संबंध,
- और उसी समय चल रहे गोचर।

यह रिपोर्ट आपके जीवन की हर महादशा और आने वाले वर्षों की हर अंतर्दशा तारीखों और आपकी आयु के साथ बताती है।

गोचर, साढ़ेसाती और ढैया

गोचर बताता है कि ग्रह अभी कहाँ चल रहे हैं, आपकी जन्म कुंडली, विशेषकर चंद्र राशि की तुलना में।

साढ़ेसाती

साढ़ेसाती लगभग साढ़े सात वर्ष की वह अवधि है जब शनि आपकी चंद्र राशि से पहले वाली राशि, चंद्र राशि और उसके बाद वाली राशि से गुजरते हैं। यह प्रायः जीवन में दो या तीन बार आती है। यह जिम्मेदारी, परिपक्वता और कड़ी मेहनत का समय है, और इसका प्रभाव काफ़ी हद तक इस पर निर्भर करता है कि आपकी कुंडली में शनि किन भावों के स्वामी हैं। इससे डरने की ज़रूरत नहीं; बहुत से लोग इसी दौरान सबसे अधिक स्थिरता पाते हैं।

ढैया (छोटी पनौती)

चंद्र से चौथे (कंटक) और आठवें (अष्टम) भाव में शनि का ढाई-ढाई वर्ष का गोचर भी धैर्य और सावधानी माँगता है।

गुरु और राहु का गोचर

गुरु की वार्षिक चाल उन भावों में वृद्धि लाती है जिनसे वह गुजरते हैं और जिन पर दृष्टि डालते हैं; विवाह, संतान, शिक्षा और लाभ का समय अक्सर गुरु से तय होता है। राहु और केतु हर 18 महीने में राशि बदलते हैं और उन क्षेत्रों को उजागर करते हैं जहाँ इच्छा और वैराग्य का खेल चलता है।

योग और दोष

योग ग्रहों का विशेष संयोग है जो कोई विशेष फल देता है। शास्त्रों में सैकड़ों योग बताए गए हैं; यह रिपोर्ट केवल वही योग दिखाती है जो वास्तव में आपकी कुंडली में हैं और उनके बल पर टिप्पणी करती है, क्योंकि कमज़ोर ग्रहों से बना योग मामूली फल देता है।

सामान्य प्रकार

- **पंच महापुरुष योग** (रुचक, भद्र, हंस, मालव्य, शश): केंद्र में बलवान ग्रह।
- **राजयोग:** केंद्र और त्रिकोण के स्वामियों का संबंध, जो पद और सफलता देता है।
- **धन योग:** धन के संयोग।

- **विपरीत राजयोग:** कठिनाइयों के बाद मिलने वाली सफलता।
- **चंद्र योग** (गजकेसरी, सुनफा, अनफा आदि): चंद्रमा से बनने वाले संयोग।

दोष

दोष ऐसा संयोग है जिसे चुनौतीपूर्ण माना जाता है, जैसे मांगलिक (मंगल) दोष या कालसर्प। अधिकांश दोषों के शास्त्रीय परिहार हैं, और लगभग सभी ऐसी प्रवृत्तियाँ बताते हैं जिन्हें जागरूकता से संभाला जा सकता है। यह रिपोर्ट हमेशा बिना बढ़ा-चढ़ाकर बताती है कि कोई दोष है, आंशिक है या निरस्त है।

वर्ग कुंडलियाँ: D9 और D10

वर्ग कुंडलियाँ जीवन के विशेष क्षेत्रों को परखने के लिए हर राशि को छोटे भागों में बाँटती हैं।

- **D9 नवांश:** सबसे महत्वपूर्ण वर्ग कुंडली। यह ग्रहों का आंतरिक बल, विवाह और जीवनसाथी, और जीवन के उत्तरार्ध के फल दिखाती है। D9 में बलवान ग्रह जन्म कुंडली की स्थिति से अनुमानित फल से बेहतर फल देता है।
- **D10 दशमांश:** करियर की कुंडली। यह पेशा, पद और कार्य की उपलब्धियाँ दिखाती है।

यह रिपोर्ट आपकी D1 (जन्म) और D9 दोनों कुंडलियाँ दिखाती है, और विश्लेषण में D9 तथा D10 राशियों का उपयोग करती है।

उपायों के प्रति हमारा दृष्टिकोण

इस रिपोर्ट के उपाय सरल, निःशुल्क या कम खर्च वाले और व्यावहारिक चुने गए हैं: दैनिक आदतें, साप्ताहिक अभ्यास, छोटे मंत्र, सेवा और जीवनशैली में बदलाव। ये उन ग्रहों के लिए चुने गए हैं जिन्हें आपकी कुंडली में सबसे अधिक सहारे की ज़रूरत है, और आने वाले समय के लिए।

हम महँगे रत्न, पूजा या अनुष्ठान नहीं बताते, और कभी यह नहीं कहते कि कोई उपाय न खरीदने पर कुछ बुरा होगा। यदि आप रत्न धारण करना चाहते हैं, तो किसी योग्य ज्योतिषी से पूरी कुंडली जाँचवाकर ही करें, क्योंकि ग़लत रत्न ग़लत ग्रह को बल दे सकता है।

सबसे शक्तिशाली उपाय हमेशा आपका अपना आचरण है: अनुशासन, दया, ईमानदारी और निरंतर प्रयास।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

यह रिपोर्ट कितनी सटीक है?

ग्रहों की स्थिति नासा जेपीएल के एफ़ेमेरिस डेटा से गणना की गई है और कुछ आर्क-सेकंड तक सटीक है। फलादेश शास्त्रीय वैदिक सिद्धांतों पर आधारित है। समय की सटीकता बहुत हद तक आपके सही जन्म समय पर निर्भर करती है।

मेरा जन्म समय अनुमानित है। क्या इससे फ़र्क पड़ता है?

हाँ। 10-15 मिनट का अंतर लग्न का अंश, कुछ ग्रहों की भाव-स्थिति और दशा की तारीखें हफ़्तों या महीनों तक बदल सकता है। यदि इस रिपोर्ट में बीते समय की जाँच आपके जीवन से मेल नहीं खाती, तो जन्म समय का शोधन करवाने पर विचार करें।

मेरी रिपोर्ट किसी दूसरी वेबसाइट से थोड़ी अलग क्यों है?

अलग-अलग सॉफ़्टवेयर अलग अयनांश, एफ़ेमेरिस और गणना पद्धतियाँ उपयोग करते हैं। दशा की तारीखों में कुछ दिनों या स्थिति में कुछ कला का अंतर सामान्य है।

क्या मांगलिक दोष ख़तरनाक है?

नहीं। यह संबंधों में मंगल की प्रबल ऊर्जा को बताता है। यह बहुत सामान्य है, अक्सर शास्त्रीय नियमों से निरस्त हो जाता है, और अच्छे मिलान तथा आपसी समझ से संभल जाता है।

क्या मुझे साढ़ेसाती से डरना चाहिए?

नहीं। साढ़ेसाती ज़िम्मेदारी और परिपक्वता का समय है। धैर्य और निरंतर प्रयास से बहुत से लोग इसी दौरान स्थायी स्थिरता पाते हैं।

क्या ज्योतिष ठीक-ठीक बता सकता है कि क्या होगा?

ज्योतिष प्रवृत्तियाँ और अनुकूल या चुनौतीपूर्ण समय बताता है। वास्तविक परिणाम आपके निर्णय, प्रयास और परिस्थितियाँ तय करते हैं।

यदि कोई भविष्यवाणी सच न हो तो क्या करें?

इस रिपोर्ट को मार्गदर्शन मानें, निश्चितता नहीं। अपना जन्म विवरण जाँचें, और याद रखें कि स्वतंत्र इच्छा और प्रयास की हमेशा बड़ी भूमिका होती है।

इस रिपोर्ट के बारे में

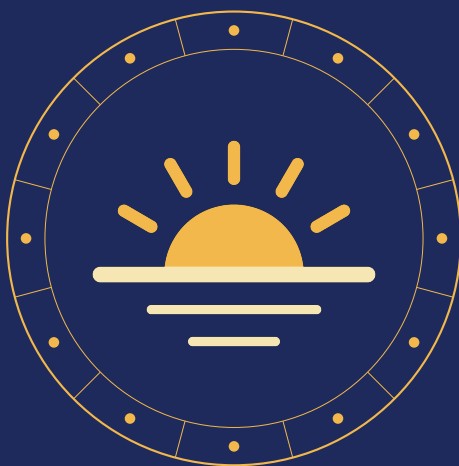
इस रिपोर्ट का उपयोग कैसे करें

यह रिपोर्ट आपके सटीक जन्म समय और स्थान के लिए लाहिड़ी अयनांश, पूर्ण-राशि भाव पद्धति और विंशोत्तरी दशा से गणना करके, विशेष रूप से आपकी कुंडली के लिए लिखी गई है।

सटीकता आपके जन्म समय पर निर्भर करती है। 10-15 मिनट का अंतर भी लग्न के अंश और दशा की तारीखें बदल सकता है। इसे जाँचने के लिए 'अपने अतीत से इस रिपोर्ट को परखें' भाग का उपयोग करें।

यह रिपोर्ट मार्गदर्शन और आत्म-चिंतन के लिए है। ज्योतिष एक पारंपरिक मान्यता पद्धति है, विज्ञान नहीं, और यहाँ लिखी कोई भी बात किसी परिणाम की गारंटी नहीं देती। यह चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक सलाह नहीं है। महत्वपूर्ण निर्णय अपने विवेक से और आवश्यकता हो तो किसी योग्य विशेषज्ञ की सलाह से लें।

रिपोर्ट के बारे में कोई प्रश्न? atastro.in | atastro.in@gmail.com



AT ASTRO

अपनी जन्म कुंडली हमें सौंपने के लिए धन्यवाद ।
अपनी रिपोर्ट धीरे-धीरे पढ़ें, और हर कुछ महीनों में
तारीखें आने पर इसे फिर से देखें ।
यह आपका मार्गदर्शन करे, कभी डराए नहीं ।

अपने परिवार और मित्रों के लिए भी रिपोर्ट मंगवाएँ

atastro.in | atastro.in@gmail.com

केवल मार्गदर्शन और आत्म-चिंतन के लिए। किसी परिणाम की गारंटी नहीं; चिकित्सा, कानूनी या वित्तीय सलाह नहीं।

© 2026 AT Astro। यह रिपोर्ट केवल मुखपृष्ठ पर नामित व्यक्ति के निजी उपयोग के लिए है।